शिक्षा का उत्थान, शिक्षक का सम्मान, मानवता का कल्याण

शैक्षिक कविताओं का संकलन

काव्यांजलि दैनिक सृजन

(5701 - 5800)

मिशन शिक्षण संवाद

#9458278429

शिक्षा का उत्थान | शिक्षक का सम्मान | मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 27/01/2023 दिन-शुक्रवार

5701

बसन्त पञ्चमी

खेतों में पीली सरसों लहराई,
धरा ने ली फिर अंगडाई।
फूलों से पेड़-पौधे लहराए,
कण-कण में सुगन्ध महकाए।।

हो प्रफुल्लित हर्ष है छाया,
धरती में नव जीवन लाया।
पीली-धानी चुनरी ओढ़े,
ऋतुराज बसन्त है आया।।

शीत ऋतु की हुई विदाई,
हर मन में खुशियाँ छायी।
मधुमास हर मन को भाया,
धरा में जब नवयौवन आया।।

माँ सरस्वती का करते वन्दन,
मधुमय हो गया वन, उपवन।
चहुँ दिशि बसन्त बहार है छायी,
मनभावन बसन्त ऋतु जब आयी।।

रचना-:
लक्ष्मी चन्द्रवाल (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 28.01.2023 दिन- शनिवार

5702

आया है गणतन्त्र दिवस

आया है गणतन्त्र दिवस फिर,
आओ मिलकर सभी मनाएँ।
देश के उन वीरों की गाथा,
सबको पुन:-पुन: सुनाएँ।।

हर हिन्दू, हर मुस्लिम की पहचान है,
ये तीन रंगों का ध्वज अपनी पहचान है।
लाल, हरे और श्वेत रंग से सजा हुआ,
हाँ, यही तिरंगा हम सबका अभिमान है।।

वीरों की कुर्बानी ये कहता,
देश की हरियाली बतलाता।
शान्ति और उन्नति के पथ पर,
चलना है सबको सिखलाता।।

आओ झुककर करें नमन हम,
भारती माँ को करें प्रणाम।
देश के 74 वें गणतन्त्र पर,
बनें समर्पित देश के नाम।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

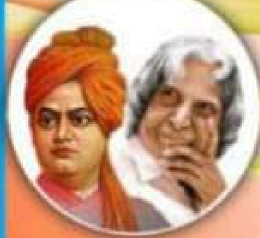

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 28/01/2023　　दिन- शनिवार

5703

गणतन्त्र दिवस

भारत की अखण्डता को,
जरा भी आँच न आने पाए।
वीरों द्वारा किया गया संघर्ष,
आओ मिलकर इसकी शान बढाएँ।।

देश के लिए मान सम्मान रहे,
हर एक के दिल में विश्वास रहे।
जिनके कारण ये दिन आया,
उन वीरों के बलिदान का मान रहे।।

ना जाने कितने वीरों ने जान,
गँवायी थी देश के खातिर।
ना जियो, ना मरो धर्म के नाम पर,
बस जियो वतन के नाम पर।।

गणतन्त्र दिवस पर मिलकर,
हम सब तिरंगा फहराएँ।
अपना गणतन्त्र दिवस है आया,
झूमे नाचें और खुशी मनाएँ।।

रचना-:
दमयन्ती राणा (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 30-01-2023 दिन- सोमवार

5704

पंचतत्व

वायु, जल, अग्नि से बहार,
इनके बिन जीवन बेकार।
सबसे बड़े हैं ये उपहार,
इनसे ही सफल सारे संचार।।

वायु से है संसार गतिमान,
वायु से ही बनते शक्तिमान।
प्राण-वायु बिन जीवन कैसा,
काम न आ पाए तब पैसा।।

एक-एक बूँद है बड़ी कीमती,
पानी से जीवन बगिया सजती।
पानी बिन सब कुछ सूना रे,
पानी से ही जग सौन्दर्य दूना रे।।

प्रिय अग्नि देती है सन्देश,
ऊर्जित हो धरो सुन्दर वेश।
ज्ञान शक्ति से जगमगाओ,
जीवन अपना सफल बनाओ।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी,
जवाँ, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 30.01.2023 दिन- सोमवार

5705

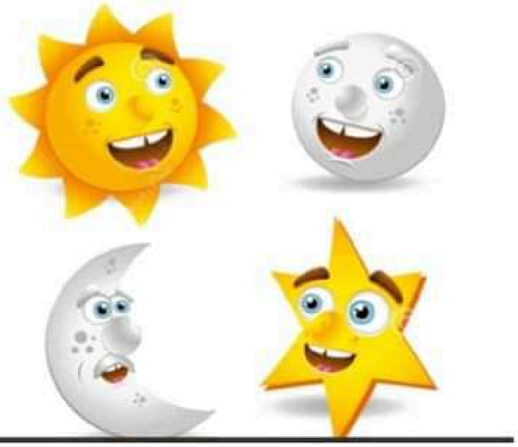

चन्दा....

चन्दा मामा, आओ-आओ,
सुन्दर मुखड़ा तुम दिखलाओ।
यूँ बदली में मत छिप जाओ,
इतना तुम भी मत इतराओ।।

नीला अम्बर तेरा है,
हर दिन आकार बदलते हो।
तारों से घिर जाते हो,
चन्दा मामा कहलाते हो।।

चाँद-चकोरा है तेरा नाम,
रात चाँदनी तू फैलाये।
सुन्दर मुखड़ा थाली गोल,
तेरा कोई नही है मोल।।

तेरी तो है शान निराल,
आसमान में चादर तानी।
उजली रंगत निर्मल प्यारी,
चन्दा मामा तेरी शान न्यारी।।

रचना
शीबा नाज अंसारी (प्र०अ०)
प्रा० वि० बैसनपुरवा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 31.01.2023

दिन- मंगलवार

5706

छोटी बच्ची

आओ! सुनाऊँ तुम्हें एक कहानी,
छोटी बच्ची करती थी मनमानी।
नहीं करती पूरा कोई काम,
हर वक़्त चाहिए उसको आराम।।

पढ़ने से वह दूर भागती,
लिखने का तो मत लो नाम।
खाना भाये उसको दिन-भर,
खेल खिलौनों को ले थाम।।

नहीं भाती ये आदत उसकी,
टीचर ने जब बात कही।
पढ़ाई का महत्व बताकर,
उसको दी शुरुआत नयी।।

माता-पिता का नाम हो रोशन,
जीवन का ऐसा रखो लक्ष्य।
बच्ची को अपनी मनमानी पर,
हुई ग्लानि, बनी वह सभ्य।।

रचना
आरती वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० रेवा
बिसवाँ, सीतापुर

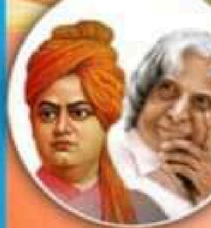

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 31-01-2023 दिन- मंगलवार

5707

मेरा देश महान

बड़ा ही कलयुग छाया है आज,
कैसे बने मेरा देश महान?
कहीं फैला है आतंकवाद,
कही घात लगाये है बैठा शैतान।।

आधुनिकता का दौर है आया,
देखो कैसा धुन्ध है छाया?
व्हाट्सएप पर लगा कर नारे,
कहते बन गया मेरा देश महान।।

आपाधापी की धुन में आज,
इन्सानियत पर छाया खतरा।
मुश्किल पड़े जब किसी पर,
केवल अपना रोना रोता इन्सान।।

कभी सोने की चिड़िया था मेरा देश,
हर दिल बसता था एक नेक इन्सान।
आज पाखण्डी धर साधु-वेश,
कहे मैं करूँ जगत कल्याण।।

रचना
ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना,
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 31/01/2023 दिन- मंगलवार

5708

पतंग

उतरायणी का दिन अति पावन,
उतरायणी से होते सब शुभ कर्म।
उड़ेंगी आकाश में पतंग,
होंगे लाल, पीले सब रंग।।

एक ऐसी पतंग बनाएँ,
जो हमको सैर कराए।
आसमान में लहराए,
हिचकोले खाती जाए।।

उड़न खटोला सी डोले,
डोर थाम कर हम डटे रहें।
विजय की पताका फहराएँ,
हम भी सैर कर आएँ।।

गंगा में डुबकी लगाकर,
उड़े पतंग हम लेकर।
करो शीतल तन और मन,
आज का दिन है अति पावन।।

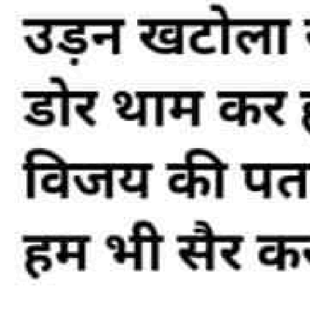

रचना-:
शोभा दुर्गापाल (स०अ०)
रा० प्रा० वि० देवकाधुरा
ब्लॉक- भीमताल, नैनीताल

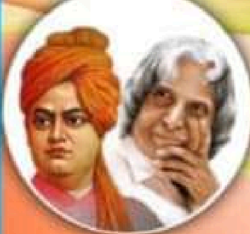

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 01.02.2023 दिन- बुधवार

5709

ऋतु बसन्त की ...

शिशिर, शीत की हुई विदाई,
अति मोहक बसन्त ऋतु आयी।
मन्द पवन चले अति सुखदाई,
प्रकृति छटा हरियाली छायी।।

महुआ महके, कोयल चहके,
पीत वसन में लाही लहके।
ऋतु बसन्त की मोहक ऋतु में,
खुशी से नर-नारी सब बहके।।

हिमगिरि से हिम पिघल-पिघलकर,
बहता नदियों में जल कल-कल।
भौरों का गुञ्जन बागों में,
तालाबों में खिले दल कमल।।

रचना
अभय प्रताप सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० पकरिया भटपुरवा
हरगाँव, सीतापुर

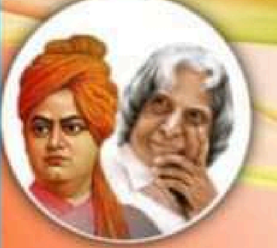

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 01-02-2023

दिन- बुधवार

5710

जवान मतवाला (भाग-1)

नब्ज जमाती सर्दी हो या,
जेठ दुपहरी का तपता दिन।
कभी न डिगती हिम्मत उसकी,
बढ़ता और मनोबल प्रतिदिन।।

घर से दूर अकेला रहकर,
पीता है नित ग़म की हाला।
विषम परिस्थितियों से लड़ता,
सेना का जवान मतवाला।।

भारतीय सेना के आगे,
नतमस्तक हर जन होता है।
जो इससे टकराता है वो,
अपना जन-धन सब खोता है।।

सारे देश विश्व को देखो,
जपते हैं इसकी ही माला।
विषम परिस्थितियों से लड़ता,
सेना का जवान मतवाला।।

रचना
प्रदीप कुमार चौहान (प्र०अ०)
प्रा० वि० कलाई
धनीपुर, अलीगढ़

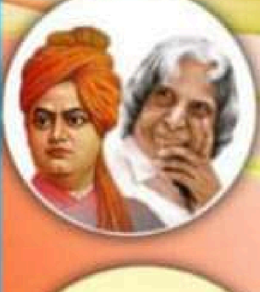

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 01/02/2023 दिन- बुधवार

5711

"मेरे देश के जवान"

शौर्य, वीरता, साहस, पराक्रम,
जिनकी हर एक पहचान है।
वीर, धीर, तुम पराक्रमी जाँबाज हो,
मेरे देश का जवान मेरा अभिमान है।।

तुम देश की आन-बान-शान हो,
तुम ही तो हम सबका अभिमान हो।
गर जवान शरहदों पर आप ना होते,
कहाँ! घरों में हम सब निर्भय सोते।।

तुम करते वतन के साथ-साथ,
जन-जन की हर दम रक्षा।
हर पल देते वतन के लिए,
वीरता, शौर्य की परीक्षा।।

सीने पर जब हँसते-हँसते,
खाते दुश्मनों की गोलियाँ।
दर्द सीने में हँस कर छुपाते,
जुवां पर वन्दे मातरम् की बोलियाँ।।

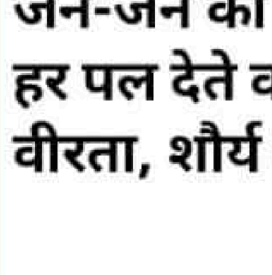

रचना-:
सूरी भारती (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० उठड़
ब्लॉक-जाखणीधार, टिहरी गढ़वाल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 02.02.2023

दिन- गुरुवार

5712

प्यारी तितली

सबसे सुन्दर सबसे प्यारी,
जग में वो सबसे न्यारी है।
रंग-बिरंगे पंखों वाली,
मेरी प्यारी तितली रानी है।।

इठलाती है, इतराती है,
रस फूलों का पी जाती है।
इन्द्रधनुषी रंगों वाली,
सबके मन को भाती है।।

फूल-फूल पर मँडराती है,
हाथ किसी के ना आती है।
पंखों को फैला कर अपने,
नील गगन में उड़ जाती है।।

रचना
शशि कुशवाहा (स०अ०)
क० वि० रामपुर घेरवा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 02.02.2022 दिन- गुरुवार

5713

महात्मा

पवित्र मन, पवित्र आत्मा,
कहलाता वह महात्मा।
भोग-विलास, तृष्णाएँ,
त्यागी सभी आकाँक्षाएँ।।

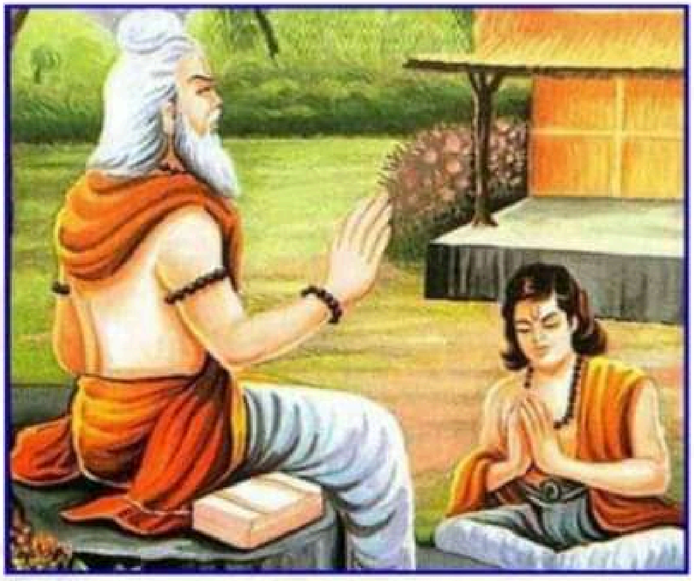

आया धरा पर दूत प्रभु का,
करता नाम सुमिरन प्रभु का।
लेकर आया प्रभु का सन्देश,
रंगने सबको अपने वेश।।

है तितिक्षा सर्वोपरि,
पवित्र आत्मा जिसमें भरी।
महात्मा होता सरल स्वभाव,
खेता सदा प्रभु भक्ति नाव।।

पहचान करना है मुश्किल,
सूरत सच्चे महात्मा की।
कलयुग में ढोंगी बहुत हैं,
दुराचारी और पाखंडी भी।।

रचना- सीमा शर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा
बागपत, बागपत

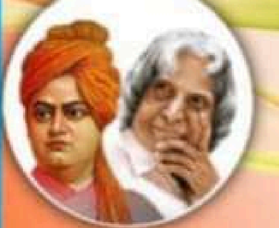

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 02-02-2023 दिन- गुरुवार

5714

मैं हूँ मिट्ठू तोता

हरा रंग और चोंच है लाल,
नाम मेरा है मिट्ठू लाल।
अमिया मिर्ची खाता हूँ,
राम-राम फिर गाता हूँ।।

हरि भजन सुनाता हूँ,
और गाली भी दे जाता हूँ।
रट-रट कर मैं हुआ बड़ा,
बुआ कहती मुझे सुआ।।

सभी मुझे करते हैं प्यार,
मुझमें बसती सबकी जान।
प्यार सभी का पाता हूँ,
फिर भी खुश नहीं रह पाता हूँ।।

जंगल-जंगल फिरता था,
एक दिन घर से निकला था।
पाकर मिर्ची का लालच,
मैं पिंजड़े में फँसा पड़ा।।

सच है जो सब कहते हैं,
लालच करके फँसते हैं।
बच्चों रखना तुम यह याद,
लालच करना बुरी है बात।।

रचना
पूनम सारस्वत (स०अ०)
एकीकृत विद्यालय रुपानगला
खैर, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03/02/2023 दिन- शुक्रवार

5715

बिल्ली, बन्दर और चूहे

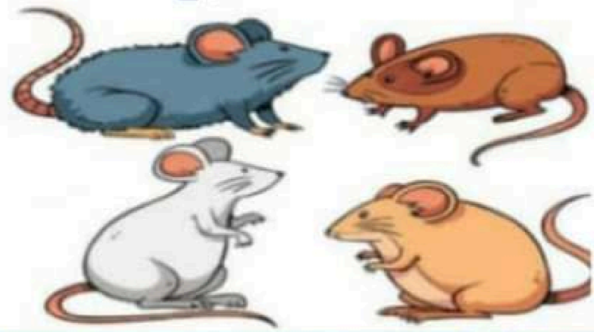

पापा लाए बाजार से,
दो बिल्ली एक बन्दर।
बन्दर बैठा पेड़ पर,
बिल्ली घर के अन्दर।।

चार चूहे घर में,
खेल रहे थे खेल।
बिल्ली और चूहों में,
हो गया गहरा मेल।।

बिल्ली बोली म्याऊँ-म्याऊँ,
चूहे बोले आऊँ-आऊँ।
भूख लगी है मुझको ज्यादा,
बोलो मैं अब किसको खाऊँ।।

मौसी जी तुम सुन लो बात,
मिलकर नहीं करो अब घात।
विश्वास नहीं था हमको तुम पर,
हम नहीं आएँगे तुम्हारे हाथ।।

रचना - प्रेमचन्द (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसोला खुर्द
जानी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03.02.2023 दिन- शुक्रवार

5716

एक पथ अनन्त

जीवन है अनमोल रतन,
कर्मों से चमकाना है।
ये जग एक पथ अनन्त,
सदा ही चलते जाना है।।

साथ नहीं कुछ लाये थे,
क्या खोना, क्या पाना है?
जैसा करते दूजे संग हम,
लौट वही फिर आना है।।

मौसम बदले, बदलें ऋतुएँ,
पतझड़, फिर सावन को आना है।
सदा न गर्मी-सर्दी ठहरे,
दुःखों को बीत ही जाना है।।

ज्वारभाटा सिन्धु का गौरव,
लहरों का ताना-बाना है।
समय को मुट्ठी में जो कर ले,
नव सूर्य उसी को पाना है।।

रचना
रश्मि शर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० विशुन नगर
खैराबाद, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

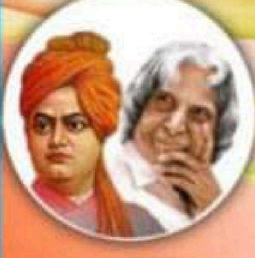

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 28/01/2023 दिन- शनिवार

5717

सरस्वती वन्दना

देवी सरस्वती, माँ भगवती!
इतनी शक्ति हमको दीजिए।
पढ़-लिखकर बनें महान,
ऐसी भक्ति हमको दीजिए।।

विद्यादायिनी, हंसवाहिनी माँ सरस्वती!
ज्ञान का हमारे विस्तार कर दीजिए।
सत-असत में भेद कर सकें,
ऐसी बुद्धि-विवेक अपार दीजिए।।

वीणावादिनी,कमलासिनी माँ सरस्वती!
सदाचारी बन सकें, ऐसा चरित्र कर दीजिए।
आशीष की कृपा अपनी बरसा के माँ!
जीवन सबका सफल कर दीजिए।।

रचना-:
लक्ष्मी चन्द्रवाल (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

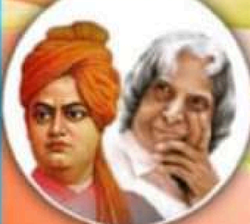

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03/02/2023

दिन- शुक्रवार

5718

होली आई है

होली आई है, होली आई है,
रंग बिरंगी होली आई है।
झूम रहे हैं, सभी मस्ती में,
गूँज रहे हैं, रसिया हस्ती में।।

गुजियाँ, पपड़ी और दही बल्ले,
खाते घूम रहे है, गली मुहल्ले।
ब्रज की होली में धूम मची है,
नर-नारी लाठियाँ खूब सजी हैं।।

रंगों से घर आँगन भींग रहा है सारा,
पिचकारी ने मन मोह लिया है हमारा।
रंग बिरंगे गुब्बारे है कितने सारे,
उड़ा गुलाल होली खेल रहे बच्चे हमारे।।

रचना
प्रियंका रावत (स०अ०)
प्रा० वि० नगला मानसिंह
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

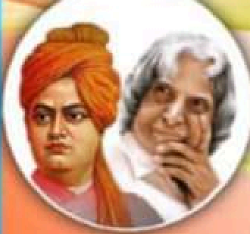

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 04.02.2023

दिन- शनिवार

5719

कल की तैयारी रख

कल की तू तैयारी रख,
मेहनत से तू यारी रख।
बाकी सब कुछ व्यर्थ है,
हँसी अपनी प्यारी रख।।

अगर लगे रहें कठिन,
उम्मीद कभी ना तोड़।
एक कदम बढ़ाता रह,
धैर्य कभी ना छोड़।।

अगर लगे लक्ष्य कठिन,
बिल्कुल मत घबराना।
चढ़ाकर प्रत्यन्चा तू,
अर्जुन-सा लगा निशाना।।

सीख ले हर चीज से,
हर चीज का है महत्व,
ना कोई छोटा-बड़ा,
सबसे रख अपनत्व।।

रचना
भुवन प्रकाश (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि० पिपरी नवीन
मिश्रिख, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान।

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। #9458278429

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 04/02/2023

दिन- शनिवार

5720

हे प्रभु!

भगवन मेरे तुम्हें मनाऊँ, कैसे?
तुम ही बताओ ना।
बीच भँवर में डूबी नैया,
आकर पार लगाओ ना।।

काँटों के संग बेल में,
कली भी खिलती है।
प्रकाश अगर मिलता है,
तो छाया भी मिलती है।।

पुकारूँ मैं बार-बार,
सुन भी ले ये पुकार।
तुम ना रूठो चाहे रूठे,
मुझसे यह सारा संसार।।

चरणों में तेरे प्रभु,
मैं शीश नवाती हूँ।
जब भी संकट आता है,
तुझको बुलाती हूँ।।

रचना - पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

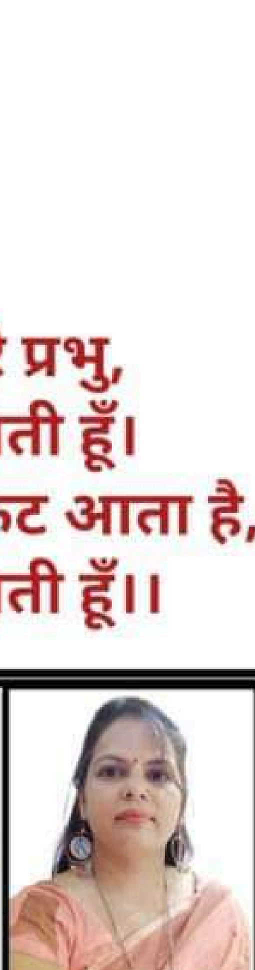

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03/02/2023 दिन- शनिवार

5721

मेरे देश के जवान (भाग-2)

देश के वीर जवान तुम देते,
देश पर खुद का बलिदान।
तुम पर मेरा हर जन्म कुर्बान,
तुम ही तो देश का स्वाभिमान।।

तिरंगे की आन-बान, तुम वीर जवान,
दुश्मनों से लोहा लेते, हँसकर देते जान।
धरती से आसमान तक है पहचान,
कोटि-कोटि नमन, तुमको वीर जवान।।

तुम नहीं हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई,
देश पर मर मिटने वाले तुम भाई-भाई।
भरा हृदय तुम्हारा देश-प्रेम से जवान,
तुमको मेरा कोटि-कोटि प्रणाम।।

रचना
सूरी भारती (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० उठड़
वि० ख०- जाखणीधार, टिहरी गढ़वाल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06.02.2023

दिन- सोमवार

5722

अरमान तिरंगा है...

अरमान तिरंगा है,
पहचान तिरंगा है।
हम हिन्दुस्तानी हैं,
हिन्दुस्तान तिरंगा है।।

है हरा और केसरिया,
न रंग है श्वेत अकेला।
ये तीन रंगों का संगम,
अभिराम तिरंगा है।।

है सत्संग और गुरुवाणी,
है ये वेदों की भाषा,
गुरु ग्रन्थ का है सन्देश,
अज़ान तिरंगा है।।

ये राम की वाणी है,
ये हज़रत का पैगाम।
हर भारतवासी की,
दिल-ओ-जान तिरंगा है।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06-02-2023 दिन- सोमवार

5723

पीपल-बरगद

याद अभी भी मुझको अपना,
अद्भुत प्यारा गाँव।
वही पुराने पीपल-बरगद,
उनकी प्यारी छाँव॥

दादा जी प्रातः लेकर के,
सैर कराने जाते।
घूम-घाम कर खेत-बाग से,
उसके नीचे आते॥

घिस्सी बरफ मिला करती थी,
बरगद के पत्ते में।
थर्माकोल, प्लास्टिक दोना,
कागज न गत्ते में॥

बरवाहों को पकड़-पकड़ कर,
झूला, झूला करते।
लटक-लटक कर बरवाहों में,
पेंगें मारा करते॥

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना
रामचन्द्र सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० जगजीवनपुर -2
ऐरायां , फतेहपुर

आओ हाथ से हाथ मिलाएँ, बेसिक शिक्षा का मान बढ़ाएँ। #9458278429

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06-02-2023 दिन- सोमवार

5724

खुल गया स्कूल

बीत गयी जाड़े की छुट्टी,
खुल गये स्कूल।
घण्टी टन-टन बोल रही है,
दौड़ चलो स्कूल।।

सुबह-सबेरे उठ गयी मुन्नी,
अपना बस्ता दिया सजा।
चल पड़ी स्कूल की ओर,
आयेगा अब खूब मजा।।

सूनापन स्कूल का भागा,
फिर से उसमें रौनक आयी।
राजू, राधा, सीमा, रेखा,
सब देखो स्कूल हैं आयी।।

क्या-क्या सीखा बच्चों?
सर्दी की प्यारी छुट्टी में।
अनुभव अपना लिखना है,
सबको अपनी कॉपी में।।

रचना
सरिता तिवारी (स०अ०)
उ० प्रा० विद्यालय कन्दैला
मसौधा, अयोध्या

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 06-02-2023 दिन- सोमवार

5725

बसन्ती छटा

पहन बसन्ती ताना-बाना,
हवा गा रही सुन्दर तराना।
पञ्चम स्वर गमक छटा है,
चहुँ ओर बसन्ती घटा है।।

रंग-बिरंगी कशीदाकारी की,
ओढ़ ली प्रकृति ने चादर।
शहनाई, सन्तूर और बाँसुरी से,
अभिनन्दन प्रकृति का सादर।।

मधुर धुनें रास रंग बहार,
अमृत रस तत्व सदाबहार।
प्रकृती नटी नट नाट्य ललाम,
हे! वाग्देवी कोटिश: प्रणाम।।

श्रृगाँर वभूषित वीर रस समा,
कण-कण में जोश सुभाष रमा।
बसन्ती चोला पुलकित जना,
हर्षित रहें सब स्वस्थ मना।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी
जवाँ,अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन
दिनांक- 06/02/2023 दिन- सोमवार
5726

ठण्ड की सुबह

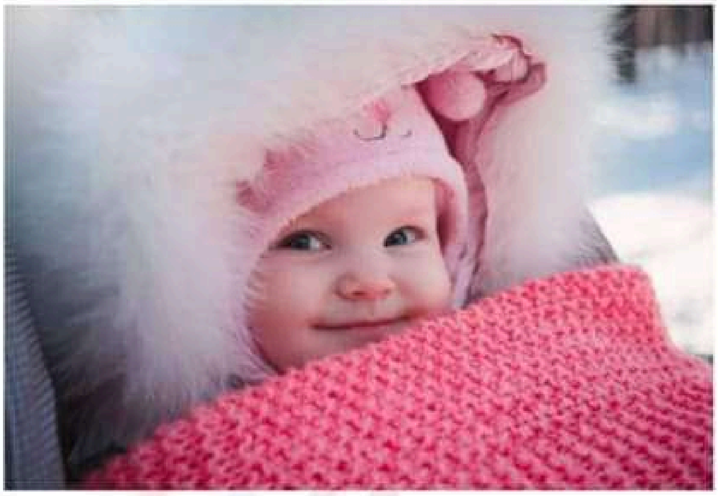

बेटा! जल्दी से तू उठ जा,
शाला तुझको जाना है।
होकर जल्दी से तैयार,
खाना भी तो खाना है।।

अच्छी सी जब धूप खिलेगी,
भागेगी तब ठण्ड फिर।
तभी रजाई से बाहर ,
निकलेगा माँ मेरा सिर।।

बेटा! उठकर बाहर देखो,
धूप खिली है चारों ओर।
आँखें खोलो बाहर निकलो,
कब! की हो गयी देखो भोर।।

माँ! अच्छा तैयार होकर,
मैं अब झट से आता हूँ ,
खाना खाकर बस्ता ले।
शाला को दौड़ लगाता हूँ।।

रचना-:
रेखा पुरोहित (स०अ०)
रा० प्रा० वि० सौंराखाल
वि० ख०- जखोली, रुद्रप्रयाग

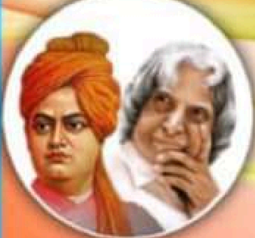

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07.02.2023 दिन- मंगलवार

5726

प्रशिक्षण

भाग-02

मौखिक भाषा से शुरू,
पठन, लेखन तथा डिकोड।
समझ को इसमें जोड़कर,
अंक, घटा और जोड़।।

खेल खोज गतिविधि करें,
स्वतन्त्र समझ का मान।
पढ़ना-लिखना स्थायी रहे,
हर समस्या का समाधान।।

परियोजना प्रश्नोत्तर रोलप्ले और खेल,
पोर्टफोलियो समूह मिल-जुलकर करें कार्य।
ए० आर० पी० प्रशिक्षक, प्रशिक्षु है शिक्षक मान्य,
खुशी-खुशी यह बीत गये दिवस सभी के चार।।

रचना
कमला देवी (शि०मि०)
प्रा० वि० खरवलिया
सिधौली, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07/02/2022 दिन- मंगलवार

5727

आतंकवाद

आतंकवाद की भेंट चढ़ गए,
जानें कितने हिन्द के लाल।
बेरहमों को लाज ना आए ,
कभी ना आए उन्हें मलाल।।

जानें कितनी माताओं से,
उनके बेटो को छीना है।
बहनें राखी देख रो रही,
बिन भाई के क्या जीना?

पत्नी का श्रृंगार उतारा,
बच्चों से बचपन को छीना।
दहशत के साए में रहकर,
मजबूरी में पड़ता जीना।।

हाथ कभी ना कुछ आएगा,
यूँ दहशत को फैलाने से।
तुम भी चैन नहीं पाओगे,
आतंकवादी बन जाने से।।

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

रचना-
रामकुमारी (स०अ०)
प्रा० वि० खालिदपुर- 2
मवाना, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 07/02/2023 दिन- मंगलवार

5728

माघ पूर्णिमा

माघ पूर्णिमा, शरद पूर्णिमा,
सोलह कलाओं का यह संगम।
जिसे देख विह्वल हो जाते,
पावन धरती के जन-जन।।
आज प्रेम की आयी है शुभ बेला,

प्रेम की लेकर शुभ बेला,
आयी शरद ऋतु की यह रात।
खिल उठी चाँदनी चाँद संग,
सोलह कलाओं को लिए साथ।।

माता लक्ष्मी और भगवान विष्णु की,
पूजा का है यह शुभ दिन बहुत विख्यात।
अन्न, फल, मिठाई ,कम्बल और भोजन दान का,
हर मानव के लिए है यह फलदायी सौगात।।

गंगा स्नान करने से इस दिन,
होता जन-जन के पापों का अन्त।
मन, हृदय सप्रेम निश्चल हो जाता,
होती पावन अमृत बहार अनन्त।।

रचना-:
देवेश्वरी सेमवाल (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० कान्दी
वि०ख०- अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08/02/2023 दिन- बुधवार

5729

अहंकार बुरी बला

अहंकार के रथ पर जब,
मानव चढ़ जाता है।
अपना पराया कुछ ना देखें,
मानवता से गिर जाता है।।

ईर्ष्या की आग में जलकर,
आग बबूला रहता है।
दोस्तों को दुश्मन बना कर,
उन पर चाबुक चलाता है।

दूसरों को कष्ट पहुँचाना,
मकसद इनका होता है।
क्या करें इन लोगों का,
जो हर पल ईर्ष्या बोता है।।

अहंकार का परिणाम बुरा है,
ना रहा रावण और कंस।
महाभारत का युद्ध हुआ,
मिट गया कौरव का वंश।।

रचना - प्रेमचन्द (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसोला खुर्द
जानी, मेरठ

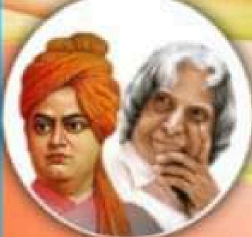

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08-02-2023

दिन- बुधवार

5730

जवान मतवाला (भाग-2)

मिलती राहत चन्द दिनों की,
छुट्टी में घर अपने आता।
और बिताकर छुट्टी सारी,
भारी मन से वापस जाता।।

महबूबा की यादों के सँग,
पीता है विरहा का प्याला।
विषम परिस्थितियों से लड़ता,
सेना का जवान मतवाला।।

मातृभूमि की खातिर जीता,
और उसी पर मर जाता है।
माँ के पय का लड़ते-लड़ते,
कर्ज अदा वो कर जाता है।।

दुश्मन भी उसके गुण गाता,
आज पड़ा ये किससे पाला।
विषम परिस्थितियों से लड़ता,
सेना का जवान मतवाला।।

रचना
प्रदीप कुमार चौहान (प्र०अ०)
प्रा०वि० कलाई
धनीपुर, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

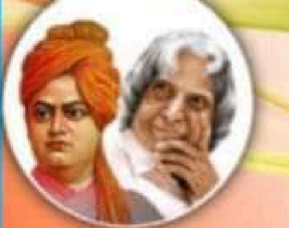

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 8.02.2023

दिन- बुधवार

5731

सन्त शिरोमणि रविदास जी

निर्गुण सम्प्रदाय के,
महान कवि थे।
अपनी रचनाओं में,
प्रेम भाव जगाने वाले थे।।

पण्डित शारदानन्द की,
पाठशाला में शिक्षा ली।
मन चंगा कठौती में गंगा,
इनकी मधुर वाणी थी।।

सन्तों में महान सन्त,
नाम से पूजे जाते थे।
इसीलिए मीरा बाई के,
धार्मिक गुरु कहलाते थे।।

रचना-:
बसन्ती शाह (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० कुमड़ी
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

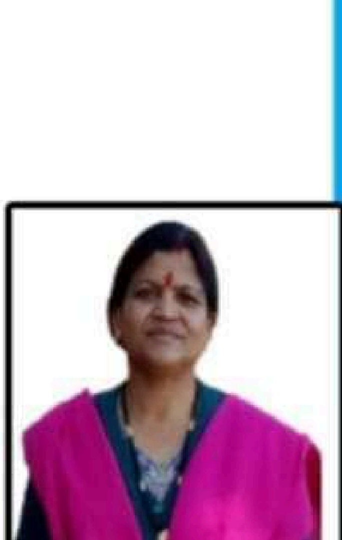

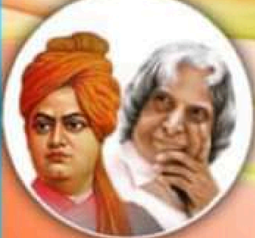

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 08.02.2023 दिन- बुधवार

5732

विज्ञान के चमत्कार

आओ बच्चों! तुम्हें दिखाएँ,
चमत्कार विज्ञान का।
व्यवहारिक ज्ञान का,
तार्किकता की खान का।।

देखनी हो जब दूर की चीज,
प्रयोग करो तुम टेलिस्कोप।
बात करनी हो जब परदेश,
टेलीफोन का बहुत स्कोप।।

अँधेरे को दूर करने हेतु,
बल्ब की क्या बात है!
धरती से लेकर अन्तरिक्ष तक,
विज्ञान को सब ज्ञात है।।

इतने चमत्कार हैं इसके,
कम्प्यूटर हो या वायुयान।
सुबह से लेकर शाम तक,
इसके प्रयोग से गर्वित हर इन्सान।।

रचना
आरती वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० रेवा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09.02.2023 दिन- गुरुवार

5733

चन्दा मामा...

दिन ढलते ही आ जाते,
रात के बनकर राजा।
और साथ में सैनिक लाते,
टिम-टिम करें उजाला।।

एक नहीं, अनेक नाम से,
जग में तुम हो जाने जाते।
शशि, रजनीश, मयंक, चन्द्रमा,
राकापति, राकेश कहलाते।।

एक समान कभी न रहते,
हर पल बदला करते।
कभी गोल थाली के जैसे,
कभी अंगूठी जैसे पतले।।

रिश्ते में सब बच्चों के,
तुम हो प्यारे चन्दा मामा।
और कभी भूगोल जब पढ़ें,
तुम्हें पृथ्वी का उपग्रह जाना।।

रचना
प्रसन्नता रस्तोगी (स०अ०)
प्रा० वि० भगवानपुर
मिश्रिख, सीतापुर

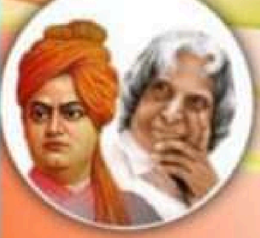

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09/02 /2023 दिन-गुरुवार

5734

स्वामी दयानन्द सरस्वती (भाग-1)

मूल शंकर तिवारी,
मूल नाम है जिनका,
श्रेष्ठ कार्यों से बढ़ता है,
चहुँओर कद उनका।।

श्रेष्ठतम अपने भीतर का,
उन्हें अच्छा लगता देना हमेशा,
श्रेष्ठ ही लौट आएगा,
भला उन्हें भय कैसा?

लॉर्ड मैकाले जैसे,
फिरंगी दिल के काले।
संस्कृति दमन के चलाएँ ,
उसने तीर और भाले।।

कहा इनमें हीन भाव भर
गुलाम इनको बना लो।
पिछड़ी संस्कृति का इनमें,
कूट-कूट कर विश्वास भर दो।।

रचना-:
डॉ०आभा सिंह भैसोड़ा (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० देवलचौड़
ब्लॉक- हल्द्वानी, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 09-02-2023 दिन- बुधवार

5735

शीत लहर

शीत-ऋतु अपने चरम पर,
बर्फ पानी हो रहा है।
नर उदासे दर्शनों को
सूर्य लेकिन सो रहा है।।

रह रहे ए०सी० घरों में,
मन दीवानी धाक में थे।
वे दीवाने इन दिनों की
बहुत दिन से ताक में थे।।

घूमने निकले सफर में,
मन प्रफुल्लित हो रहा है।
कार से निकला बदन तो,
सब रुमानी खो रहा है।।

माँ सड़क पर काम करती,
बच्चा उसका रो रहा है।
नर उदासे दर्शनों को,
सूर्य लेकिन सो रहा है।।

रचना
दौलत कुमार
ए०आर०पी०(हिन्दी)
लोधा, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन
दिनांक- 10/02/2023 दिन- शुक्रवार
5736

परिश्रम और अनुशासन

जीवन के दो मूलमन्त्र हैं,
परिश्रम और अनुशासन।
पालन करें सदा इनका,
जीवन बन जाये उपवन।।

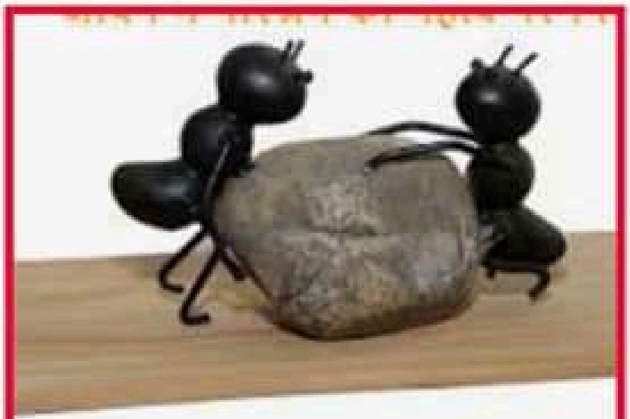

करो परिश्रम तुम इतना,
सफलता खुद ही आ जाये।
मेहनत जो है अतिशय करता,
वो सबके मन को भाये।।

अनुशासन से जीवन में,
मिलता बहुत ही फायदा।
क्योंकि इससे ही हैं सीखते,
जीवन जीने का कायदा।।

जिसके जीवन में हों दोनों,
वो निश्चित नाम कमायेगा।
होगा जो आलसी स्वयं,
यूँ ही देखता रह जायेगा।।

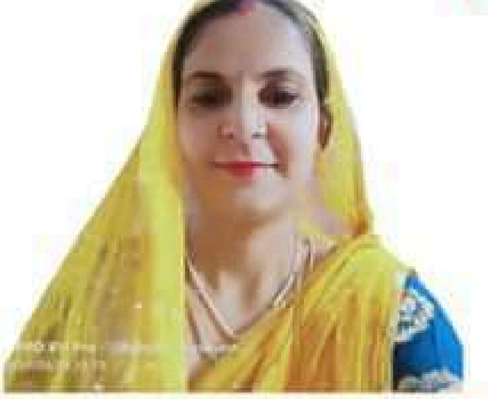

रचना-
भावना शर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० नारंगपुर
परीक्षितगढ़, मेरठ

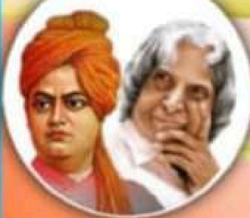

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10/02/2023 दिन- शुक्रवार

5737

डॉ0 कुमार विश्वास जन्मदिवस

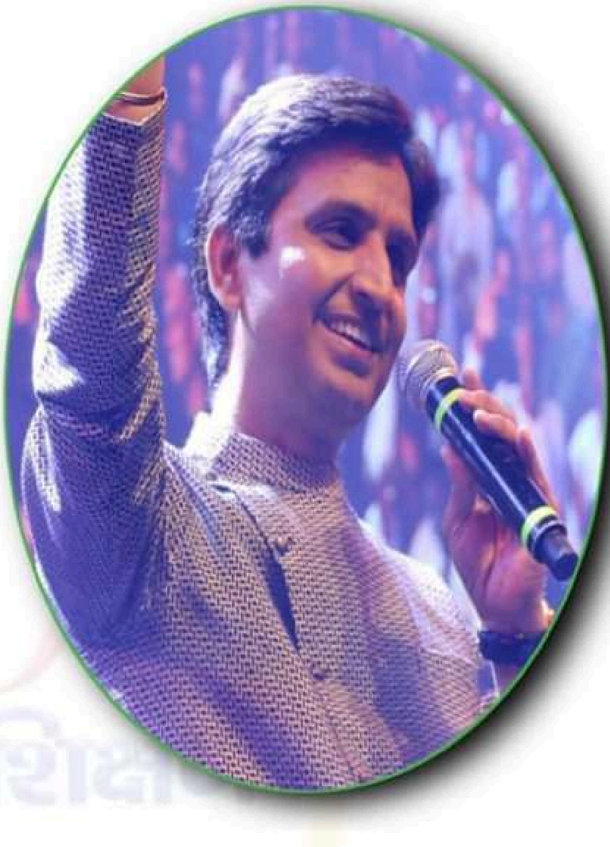

उत्तर प्रदेश में ये जन्मे,
विश्व भर में नाम कमाया।
प्रेम और पीड़ा को अपनी,
कविताओं में गुनगुनाया।।

जन-जन में हिन्दी को,
लोकप्रिय इन्होंने बनाया।
नयी पीढ़ी के लोगों को,
सरल भाषा से मिलवाया।।

हिन्दी को बिन्दी जैसा,
विश्व पटल पर सजाया।
गूगल ने भेज निमन्त्रण,
इनका सम्मान बढ़ाया।।

राम कथा को कर डिजिटल,
आम जन तक है पहुँचाया।
सभी उम्र के लोगों का,
खूब प्यार इन्होंने पाया।।

रचना
ज्योति सागर' सना (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसाना (1-8)
बागपत, बागपत

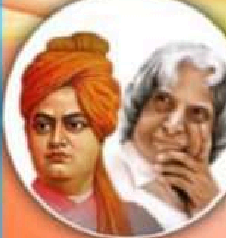

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10.02.2023 दिन- शुक्रवार

5738

शिक्षा...

शिक्षा है बड़ी अनमोल,
करो सब उसका मान।
रह न जाये इस धरा पर,
कहीं जरा सा भी अज्ञान।।

सुबह-सवेरे उठकर,
करो प्रभु को प्रणाम।
माता-पिता के चरण छुओ,
शिक्षा लो, हो जग में नाम।।

विद्यालय की हम बात करें,
शिक्षक रहे हमारे साथ।
नित-नये आयाम सीखें,
शिक्षा की हो हर क्षण बात।।

बने विद्वान और विद्यावान,
जो बचपन से रहते साथ।
गुरु की महिमा अपरम्पार,
हम पर रहे सदा इनका हाथ।।

रचना
शीबा नाज अंसारी (प्र०अ०)
प्रा० वि० बैसनपुरवा
बिसवाँ, सीतापुर

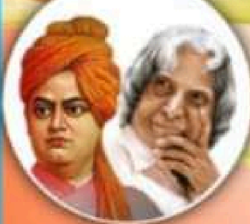

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

5739

दिनांक- 10-02-2023 दिन- शुक्रवार

मेरा घर

कितना प्यारा मेरा घर,
सबसे प्यारा मेरा घर।
बड़ा न छोटा ही सही,
मेरा प्यारा घर है यही।।

दूर कहीं मैं घूम आऊँ,
कहीं घर जैसा चैन न पाऊँ।
घर में रहता कितना आराम,
दूर है लगता ताम-झाम।।

एक कोने में सजा है बाग,
यही है मेरी खुशी का राज।
रंग-बिरंगें फूल यहाँ है,
ऐसा सुकून और कहाँ है।।

घूम लूँ चाहे मैं देश-विदेश,
घर बिन लगे न कुछ विशेष।
इतना प्यारा मेरा घर,
सबसे न्यारा मेरा घर।।

ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना
लोधा, अलीगढ़

रचना

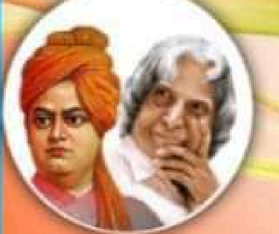

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10/02/2023 दिन- शुक्रवार

5740

सितारों के आगे

सितारों के आगे जहान और भी हैं,
अभी तो हमारे इम्तिहान और भी हैं।
नजर गई जहाँ तक,लगा मंजिल है,
पहुँचे वहाँ तो, रास्ते और भी हैं।।

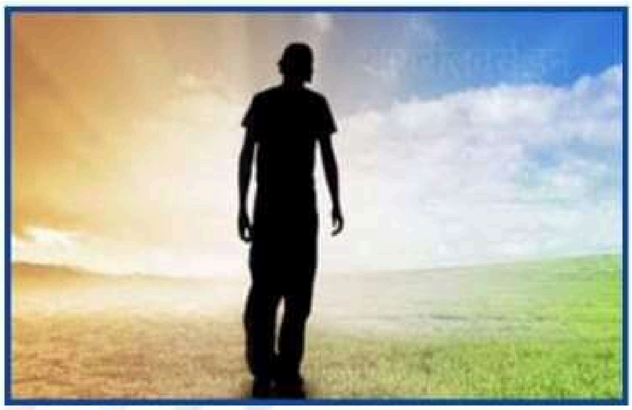

रुकना हमें नहीं आता,
पीछे मुड़ें, हमें नहीं भाता।
आसमान भले झुक जाए क्षितिज पर,
मगर हमारे तो, अथाह छोर भी हैं।।

बेटियों को स्वावलम्बी बनायें,
और पर्यावरण को बचायें।
भला करें जन का,
कुछ अर्थ निकले जीवन का।।

करने अभी ऐसे काम और भी हैं,
उमंगें हैं जब तक तराने और भी हैं।
अभी तो जीने के बहाने और भी हैं,
सितारों के आगे जहान और भी हैं।।

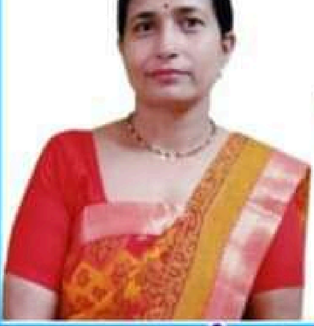

रचना-
रंजीता भारद्वाज
विज्ञान शिक्षिका (पूर्ण कालिक)
के० जी० बी० वी० गौर,
अमरौधा, कानपुर देहात

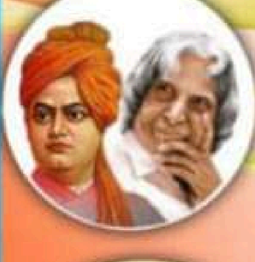

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 10/02/2023 दिन- शुक्रवार

5741

ऋतुराज बसन्त

ऋतुओं का राजा बसन्त,
आ गया लेकर के हरियाली।
हर तरफ खुशहाली छायी,
फिर से बसन्त ऋतु है आयी।।

लाल, गुलाबी, पीले फूल,
बौरें आमों में उठे झूल।
बहारों का मौसम लाती,
चारों ओर हरियाली फैलाती।।

रंग-बिरंगी तितलियाँ,
हमें देखने को मिलती।
भँवरे मतवाले मण्डराते,
कलियाँ हँसतीं मुस्काते।।

बसन्त ऋतु के आगमन पर,
प्रकृति को नया जीवन मिलता।
बसन्त ऋतु प्रकृति का उपहार,
इसलिए इसे ऋतुराज कहा जाता।।

रचना-:
दमयन्ती राणा (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 11.02.2023 दिन- शनिवार

5742

बसन्त ऋतु

जब सर्दी कम हो जाती है,
धूप भी थोड़ी बढ़ जाती है।
यह मौसम बहुत सुहाना है,
मनमोहक प्यारा-प्यारा है।।

सब पेड़ हरे हो जाते हैं,
नव पल्लव शोभा पाते हैं।
आमों में बौर आ जाता है,
खुशबू अपनी फैलाता है।।

कोयल भी कूक सुनाती है,
मधुमक्खी शहद बनाती है।
सरसों सब पीली-पीली है,
अलसी भी फूली नीली है।।

हैं बेर पक गये काटों में,
सब मटर फल गयी खेतों में।
प्रकृति पड़े जब ऐसे दिखायी,
जानो, तभी बसन्त ऋतु आयी।।

रचना
कमला देवी (शि०मि०)
प्रा० वि० खरवलिया
सिधौली, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 11-02-2023 दिन- शनिवार

5743

आया फाल्गुन माह

आया फाल्गुन माह है,
सुनहु सभी नर-नारी।
खिले पुष्प चहुँ ओर हैं,
छायी हरियाली भारी।।

जिधर देखता लहूँ सुख,
आती जब पास वयारी।
सुरभित सौरभ सुमन लें,
देय हटा सब दुबिधारी।।

मन की है ये कामना,
पल्लवित, पुष्पित वृक्ष सदा।
हों हर गली व मेड़ में,
तब जीवन हो खुशहाल यदा।।

ओजोन परत क्षय हो नहीं,
न हो बसुधा गर्म कभी।
न बदले जलवायु ये,
चेत जाओ सब जन सभी।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
मऊरानीपुर (झाँसी)

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान

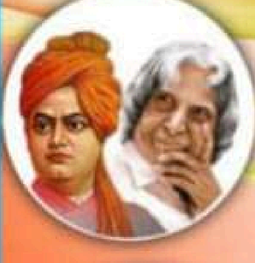

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 11/02/2023 दिन- शनिवार

5744

प्यासा कौआ

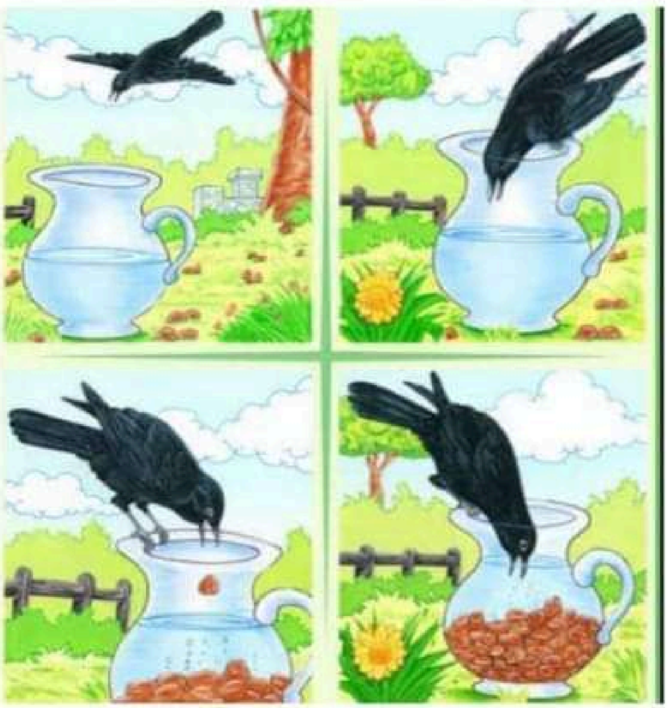

एक था कौआ बड़ा ही प्यासा,
पानी की थी कहीं न आशा।
प्यास के मारे भटक रहा था,
हो व्याकुल वो घूम रहा था।।

अचानक देखा उसने एक घड़ा,
जिसमें था बहुत कम पानी पड़ा।
सोचा इससे कैसे प्यास बुझाऊँ,
करूँ उपाय क्या, पानी ऊपर लाऊँ।।

विचार अचानक उसको आया,
छोटे-छोटे कंकड़ चोंच में लाया।
पानी फिर तली से ऊपर आया,
पानी पीकर उसने प्यास बुझाया।।

रचना-:
लक्ष्मी चन्द्रवाल (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13.02.2023

दिन- सोमवार

5745

ऋतु बसन्त की...

ऋतु बसन्त की है अब आयी,
सर्दी की हो गयी विदाई।
सिमट गया कोहरा और पाला,
मौसम में मस्ती सी छायी।।

नव पल्लव से सजते तरुवर,
झरते फूल निरन्तर झर-झर।
बहने लगी हवा सुखदायी,
ऋतु बसन्त की है अब आयी।।

फूली-फूली सरसों पीली,
अमिया की डाली बौरायी।
महक रही है गुड़ बेलों पर,
कण-कण में हरियाली छायी।।

किया श्रृंगार प्रकृति ने आकर,
नव यौवना सी बैठी सजकर।
काली कोयल मन हर लेती,
गाती है जब मधुर-मधुर स्वर।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

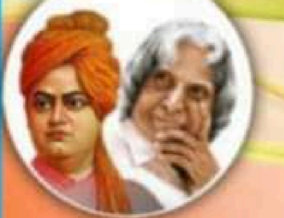

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13-02-2023   दिन- सोमवार

5746

सियाचिन के नौजवान

हम हैं सियाचिन के नौजवान,
दिखाते हैं हम अपनी शान।
बनायी हमने अलग अपनी पहचान,
हम हैं सियाचिन के नौजवान।।

सियाचिन ग्लेशियर पर अडिग हैं हम,
ना झुके हमारा झण्डा और ना हम।
बनाई हमने अलग अपनी पहचान,
किया सारा जीवन देश के नाम।।

न सर्दी हमें सताती है,
न ठण्डी हवाएँ झुकाती है।
तूफानों का करें हम सामना,
चट्टानों का करें हम मुकाबला।।

बाहर आक्रमण से हम नहीं घबराते,
देश के लिए हम मर मिट जाते।
हम है सियाचिन के नौजवान,
बस यही है हमारी पहचान।।

रचना
प्रियंका रावत (स०अ०)
प्रा० वि० नगला मानसिंह
लोधा, अलीगढ़

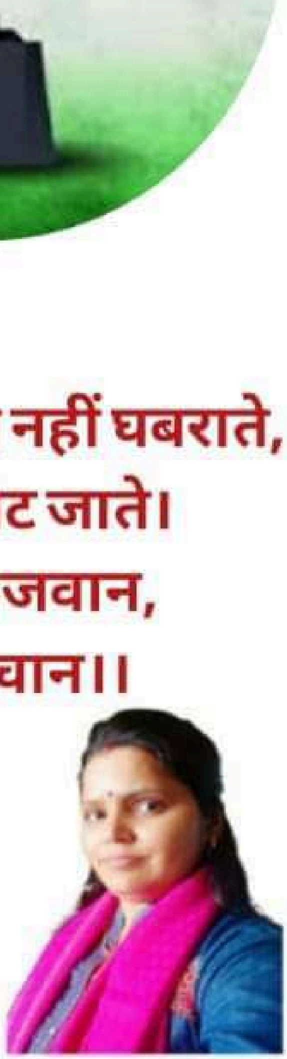

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 13/02 /2023 दिन-सोमवार

5747

स्वामी दयानन्द सरस्वती (भाग-2)

ऐसी नस्ल पैदा ,
करो भारतीयों की।
दिल में अंग्रेजियत हो,
शक्ल भारतीयों की।।

गोरी सरकार को ही,
समझें वे अपना माई-बाप।
जो ना समझे उसे,
बताओ यही है पाप।।

हिन्दी प्रेमी और वैदिक,
परम्परा के थे प्रचारक।
महर्षि दयानन्द सरस्वती,
थे निडर और आक्रामक।।

स्वामी ने दिया मूल ,
मन्त्र स्वराष्ट्र का,
तिलक जी ने बनाया,
जन वाक्य उसे राष्ट्र का।।

रचना-:
डॉ०आभा सिंह भैसोड़ा (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० देवलचौड़
ब्लॉक- हल्द्वानी, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/02/2023 दिन- मंगलवार

5748

फागुण लैगे

मौऊ बीतेगे फागुण लैगे,
बीठा पाखों मा फ्यूँली खिलीगे।
ऊँची डाण्डियों मा बुराँश खिलेगी,
ऐगि फूलों मा फुलार-दगड़यों फागुण लैगे।।

घुघुति, मेलुड़ी बासण लैगी,
ह्यंचौळा काण्ठि चमकैण लैगी।
आड़ू, क्वीर्याळ फूलण लैगी,
जिकुड़ियों मा ऐगि उलार,
दगड़ियों फाल्गुन ऐगि।।

गेहूँ की सारियों मा घर्रया फूलीगे,
डाळी डालियों मा मोल्यार ऐगि।
छैगे डालियों मा मोल्यार,
दगड़ियों फागुण लैगै।।

फागुण शिवरात्रि नजदीक ऐगि,
तेड़ु, पिनाळु, की मजा पड़ीगे।
लैंय्या, भंगुळे की बार ऐगि,
घनौळियौं कू ऐगि त्योहार,
दगड़ियों फागुण लैगै।

रचना-:
माधव सिंह नेगी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० जैली,
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5749

दिनांक- 14-02-2023 दिन- मंगलवार

सुख-दुःख

दुःख की घड़ियाँ बीत गई,
तो सुख भी कैसे ठहरेगा?
जीवन एक समन्दर है,
हर लहर पर ये तो बदलेगा।।

सुख की लहरें ऊपर उठती,
गम में दिल डूबा जाता।
दुःख की घड़ियाँ गिन-गिन कर,
छा जाता है सन्नाटा।।

ऊपर लहरें जब न रुकी,
तो नीचे कैसे ठहरेंगी?
जीवन की गति के संग-संग,
मौजें रास्ता बदलेंगी।।

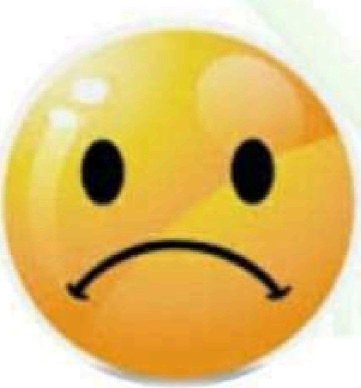

चढ़ता सूरज ढलता है,
और ढलकर उगता बारम्बार।
सूरज से सीखो तुम जीना,
चढ़ना ढलना जीवन सार।।

रचना
पूनम सारस्वत (स०अ०)
एकीकृत विद्यालय रुपानगला
खैर, अलीगढ़

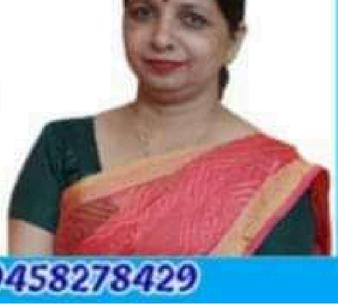

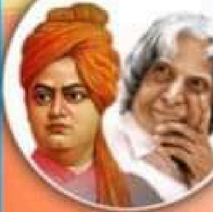

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 14/02/2023 दिन- मंगलवार

5750

शान्ति

करो कोई कर्म, पर शान्ति ना मन,
निर्मल पाप रहित नहीं कोई तन।
पाँच तत्वों से निर्मित हमारा शरीर,
उलझ कर्मजाल में करे घाव गम्भीर।।

सभी पढ़ाते शान्ति पाठ,
अमल ना करते अपने आप।
कथनी करनी में क्यों अंतराल,
करें स्वयं हल सभी सवाल।।

एक दिन लेना है सभी को विश्राम,
पहले मन शान्त, तभी करो कुछ काम।
सदाचरण, सत्कर्म, परहित भावना,
अमल करें सभी, करें ईश्वर प्रार्थना।।

मन भरा गहन जिज्ञासा,
नव-चेतना, नव-आशा।
मानव चोला उपहार प्रभु का,
धोना जन्म-जन्म की मैल का।।

रचना-
सीमा शर्मा (स०अ०)
प्राथमिक विद्यालय निवाड़ा
बागपत,बागपत

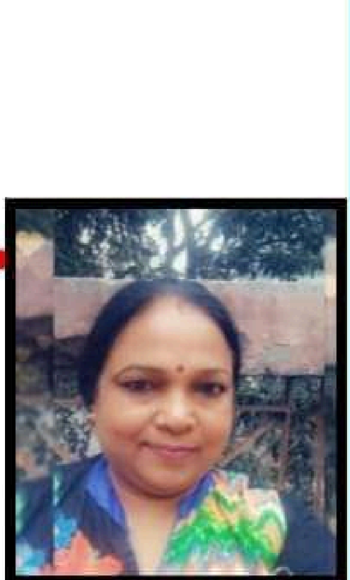

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5751

दिनांक- 14.02.2023 दिन- मंगलवार

फागुन

होली के रंग लिए,
आया है फागुन।
शहरों और गाँवों में,
घर-घर छाया फागुन।।

जीवन में रस को,
टटोल रहा है फागुन।
पनघट की चौपालों में,
डोल रहा फागुन।।

रंगों में डूबे हैं,
दुनिया के सब जन।
भाँग पिये सब डोल रहे,
तितली सा रंग लिए आया फागुन।।

लाल गुलाल से बोल रहा ,
मन मस्तिक में छाया फागुन।
गुझिया, पापड़ की सुगन्ध लिये,
ऐसा रंगो का त्योहार फागुन।।

रचना
शीबा नाज अंसारी (प्र०अ०)
प्रा० वि० बैसनपुरवा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15-02-2023 दिन- बुधवार

5752

देश के रक्षक

हुँकार में है ललकार भरी,
सीना है जिसका फौलादी।
दुश्मन को धूल चटा दे जो,
फौजी लड़ने का है आदी।।

ना बनी कभी भी किस्मत से,
बस करते हैं अपनी मनमानी।
सीमा पर बन्दूकें हरदम ताने,
बस मौत से लड़ने की ठानी।।

त्याग और बलिदानों से भरी,
इनकी होती है सारी जवानी।
ना डरें कभी भी दुश्मन से ये,
हरपल देते हैं अपनी कुर्बानी।।

मिट्टी की रक्षा के खातिर ही,
लिख दी है सारी जिन्दगानी।
ये देश नमन करता है इनको,
इनसे ही है हमारी जिन्दगानी।।

रचना
सुनील कुमार (स०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय
जौंरा, औरैया।

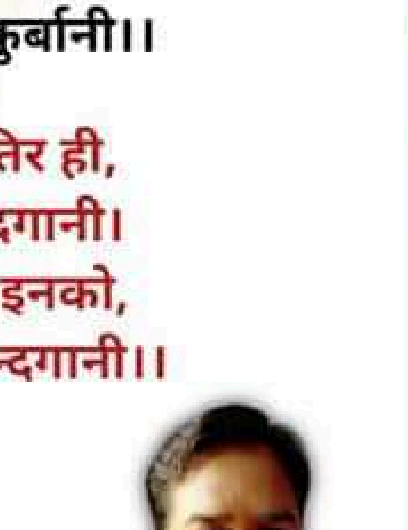

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15.02.2023 दिन- बुधवार

5753

प्यारे तारे...

टिम-टिम करते प्यारे-प्यारे,
नील गगन में कितने सारे!
करते रहते हमें इशारे,
चमको तुम भी साथ हमारे।।

इनको कोई गिन न पाये,
इनकी संख्या कौन बताये?
आसमान को रोज सजाएँ,
तारा, तारक, नक्षत्र कहलाएँ।।

मीलों हमसे दूर ये होते,
बड़े तो कोई छोटे दिखते।
जो हैं दूर वो छोटे दिखते,
और जो पास, बड़े वो दिखते।।

सूरज के जाने पर आते,
और सुबह गायब हो जाते।
रात की इनकी ड्यूटी होती,
दिन में इनकी छुट्टी होती।।

रचना
प्रसन्नता रस्तोगी (स०अ०)
प्रा० वि० भगवानपुर
मिश्रिख, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15-02-2023

दिन- बुधवार

5754

तितली रानी

प्यारी-प्यारी तितली रानी,
पँख फैलाये आती है।
फूल-फूल पर भँवरे के संग,
जा करके इतराती आती है।।

गुन-गुन गीत गाती मँडराती,
फिर पास फूलों के है आती,
चुपके-चुपके दँवें पाँव फिर,
रसपान वो कर जाती है।।

लगती सुन्दर, कितनी प्यारी!
लगती अलबेली और है न्यारी।
तुझे पकड़ने मैं दौड़ी जाती,
लेकिन हाथ तू मेरे नहीं है आती।।

नन्ही-सी गुड़िया हूँ मैं नादान,
रानी मुझको ना कर परेशान।
पास मेरे तू आ जा जल्दी,
खेलेंगे हम छुप्पा-छुप्पी।।

रचना
ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना
लोधा,अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 15/02 /2023 दिन-बुधवार

5755

महिला सशक्तिकरण

चाह नहीं है किसी अलग नाम,
इसी को महान बनाऊँगी।
नारी हूँ इस युग की, नारी की,
अलग पहचान बनाऊँगी।।

जो सदियों से देखा तुमने,
लिपटी साड़ी में, कोमल तन की।
हर घर में रहती थी वो पर,
न जान सके थे उसके मन की।।

उतारो मुझे जिस क्षेत्र में,
सर्वश्रेष्ठ कर दिखाऊँगी।
औरों से अलग हूँ,
कुछ अलग ही करके जाऊँगी।।

चाहे जो भी मैं बन जाऊँगी ,
गर्व से नारी कहलाऊँगी ।
चाहे युग कोई सा आये,
मैं ही जगत जननी कहलाऊँगी।।

रचना-:
पुष्पा तिवारी (स०अ०)
रा० इ० का० टनकपुर
ब्लॉक- टनकपुर, चम्पावत

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16-02-2023 दिन- गुरुवार

5756

उत्सवों की धूम

फागुन आयो झूम के,
होली खेलेंगे घूम के।
उत्सव मनाएँ धूम से,
नाचे-गाएँगे झूम के।।

भारत देश महान है,
उत्सव यहाँ के प्राण हैं।
यहाँ उत्सव होते रहते,
नवसृजन हैं करते रहते।।

कभी ईद, कभी होली है,
उत्सवों ने मिश्री घोली है।
अनगिनत उत्सव होते हैं,
मानव-मानव से जुड़ते हैं।।

हर पल उत्सवों का विधान है,
मानवता का ये आधान है।
संस्कृति भारत की महान है,
देशों में भारत देश प्रधान है।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी,
जवाँ, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16/02/2023 दिन-गुरुवार

5757

फाल्गुन आया

सज गई बसन्ती दुल्हन,
दूल्हा बनकर आया फाल्गुन।
फूली सरसों खलिहानों में,
कोयल कूके बागानों में।।

नित नई उमंगे लेकर साथ,
गाएँ होली गीत मल्हार।
निखर गया है अम्बर,
धरती पर छायी बहार।।

बौराये वृक्षों में फलियाँ,
सरगम की बाजे झंकार।
सलिला, समीर हर्ष लहराये,
मोर, पपीहा, कोयल गाये।।

नई वधू सी सजी धरा है,
कली, सुमन सब मुस्काए।
फाल्गुन आया बड़ा अलबेला,
नई उमंगे लेकर आए।।

रचना-:
हेमलता सुयाल (स०अ०)
रा० प्रा० वि० जयपुरखीमा
क्षेत्र- हल्द्वानी, नैनीताल

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 16.02.2023 दिन- गुरुवार

5758

सरदार वल्लभ भाई पटेल

सरदार वल्लभ भाई पटेल,
लौह पुरुष के नाम से जाने जाते थे।
उत्पादन बढ़ाओ,खर्च घटाओ,
मुम्बई सभा में सिंह जैसे दहाड़े थे।।

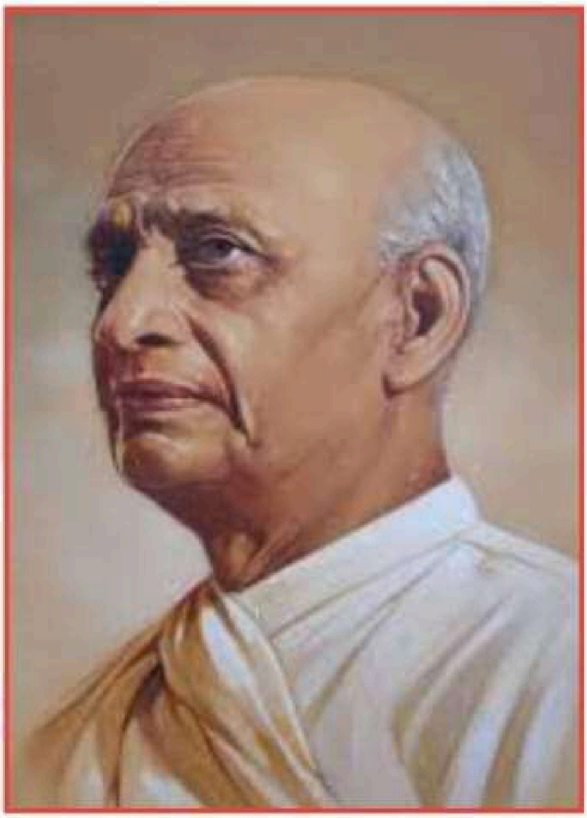

31अक्टूबर 1875 को गुजरात में जन्मे थे,
माता लाड़बाई पिता झबेर भाई पटेल थे।
भारत रत्न से सम्मानित सरदार पटेल,
अभूतपूर्व साहस के भंडार थे।।

स्वतंत्र भारत के उप प्रधानमंत्री पटेल,
बारडोली सत्याग्रह के नेता पटेल।
देशी रियासतों के विलय के प्रणेता,
भारतीय अधिवक्ता महान राजनेता पटेल।।

भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के नेता पटेल,
भारतीय गणराज्य के संस्थापक पटेल।
एकीकृत, स्वतंत्र राष्ट्र के मार्गदर्शक पटेल,
किसानों के संघर्ष के साथी पटेल।।

रचना- सुमन कुशवाहा (प्र०अ०)
प्रा० वि० भगवानपुर
नेवादा, कौशाम्बी

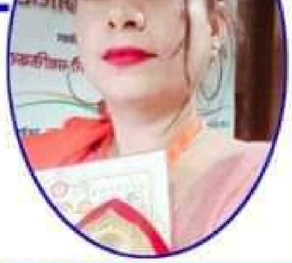

दिनांक- 17/02/2023 दिन- शुक्रवार

5759

माँ

त्याग अभावों को गले लगाकर,
भूखी प्यासी माँ की ममता।
अपने लहु से पालन करती,
कहलाती सृष्टि की कर्ता।।

पृथ्वी जैसा धैर्य रखती,
सागर जैसी गहरी माँ।
दु:ख सह कर चुपके से हँसती,
घर द्वार की प्रहरी माँ।।

खुद गीले में सोकर जननी,
सूखे में सुलाए अपना दुलार।
अनमोल है माँ तेरी ममता,
माँ दुनिया का अनमोल उपहार।।

स्वर्ग लोक है माँ की गोदी,
मिलता है इसमें सुख अपार।
रात-रात को जाग-जाग कर,
करती बच्चों को दुलार।।

रचना -
प्रेमचन्द (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसोला खुर्द
जानी, मेरठ

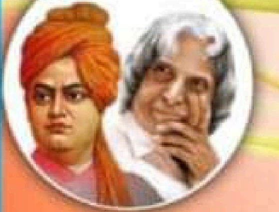

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17.02.2023 दिन- शुक्रवार

5760

पतझर के पात ...

हम पतझर के पात,
हमारे गिरने से कैसा आघात!
क्या सुबह और क्या काली रात?
जब होता सबका पर्णपात।।

ऐ तरुवर के पात-पात!
तुम सुखी रहो सब साथ-साथ।
मन बोझिल करने से भी क्या?
जब होता सबका पर्णपात।।

न भूत का हो पछतावा,
न भविष्य का हो आघात।
मस्त रहो तुम पात-पात,
जब होता सबका पर्णपात।।

रचना
अभय प्रताप सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० पकरिया भटपुरवा
हरगाँव, सीतापुर

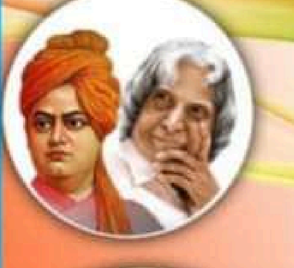

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17/02/2023   दिन- शुक्रवार

5761

तालाब

तालाब गाँव की अनमोल धरोहर,
सिंघाड़ा, कमल के पौधे मनोहर।
पूर्वजों ने इनको सुन्दर बनवाया,
मछली, कछुआ, इनमें डलवाया।।

जल-स्रोतों का पानी बढ़ाते,
पशु-पक्षी पानी पीने जाते।
जल-जीव भी जीवन पाते,
परम्परा की रस्म निभाते।।

तालाबों की बच्चों रक्षा करना,
बिन समझे पानी में न उतरना।
कूड़ा-कचरा से न गन्दा करना,
वृक्षारोपण इनके किनारे करना।।

रचना-
अंजू गुप्ता (प्र०अ०)
प्रा० वि० खम्हौरा- १
महुआ, बाँदा

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17-02-2023 दिन- शुक्रवार

5762

मुकद्दर से टक्कर

मुकद्दर से मिला हूँ मैं,
मुकद्दर से लड़ा हूँ मैं।
कहा उसने बड़ा हूँ मैं,
कहा मैंने जमा हूँ मैं।।

नहीं रे अब डरूँगा मैं,
नहीं रे अब हटूँगा मैं।
धीरज भी रखूँगा मैं,
जीवन भर चलूँगा मैं।।

गुलशन का रे फूल हूँ मैं,
चमन में भी खिलूँगा मैं।
हारना ही ना जानूँ मैं,
जीतने का जुनू हूँ मैं।।

मुकद्दर हार कर बोला,
तुझे मैं क्या हराऊँगा।
जूझने का है तू आदी,
नहीं करनी है बरबादी।।

रचना
राहुल कांकरान (स०अ०)
प्रा० वि० ढौंडा
गोंडा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

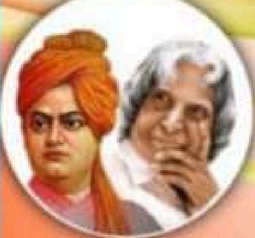

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 17/02/2023 दिन-शुक्रवार

5763

बेटा-बेटी एक समान

पापा जब घर आयेंगे,
चाकलेट, बिस्किट लायेंगे।
ना, ना ज्यादा मैं खाऊँगा,
छुटकी को मैं थोड़ा दूँगा।।

मैं पापा का प्यारा बेटा,
तू लड़की है मैं खाऊँगा।
यह सुन पापा दौड़ के आए,
दोनों को है गोद उठाए।।

बोले बेटा चुन्नू-मुन्नू आओ,
दोनों कन्धों पर चढ़ जाओ।
बाँट बराबर दोनों खाओ,
टॉफी भी गिनकर ले जाओ।।

तब चून्नू के समझ में आया,
पापा के हम दो सन्तान।
दोनों में है प्यार समान,
भाई-बहन दोऊ समान।।

रचना-:
हेमलता बहुगुणा (अ० प्रा० प्र०अ०)
उच्च प्राथमिक विद्यालय
चम्बा, टिहरी गढ़वाल

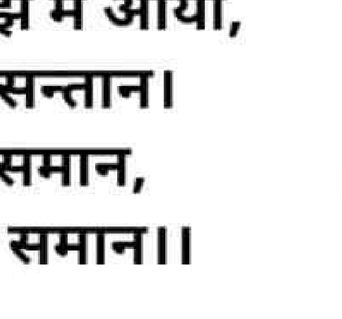

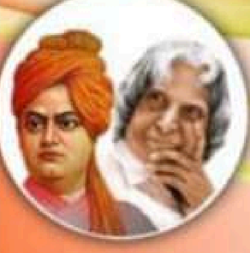

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 18/02/2023 दिन-शनिवार

5764

शिवरात्रि तेरा अभिनन्दन

महाशिवरात्रि तेरा अभिनन्दन,
शिव परिवार को मेरा वन्दन।
गणपति, गौरा, कार्तिकेय, श्रीशंकर,
नन्दी, भृंगि सहित हो सबका पूजन।।

जल, फल-फूल, बेलपत्र का अर्पण,
अर्पित है बारह भोग, छत्तीस व्यञ्जन।
प्रभु के श्री चरणों में करते हैं नमन,
महाशिवरात्रि तुम्हारा अभिनन्दन।।

शिव-शक्ति के पूजन से बने जीवन सुखमय,
शिव जपें निरन्तर कभी न हो जीवन दु:खमय।
शिव कष्ट हरे, दु:ख हरे, हरे कोटि संताप,
सुख-समृद्धि, धन-धान्य मिले, शिव हरे महापाप।।

शिव अविनाशी घट-घट वासी,
शिव जगत के हैं आधार।
शिव सत्य है, शिव सुन्दर है,
शिव सर्वत्र व्याप्त हैं, शिव हैं पालनहार।।

रचना-:
माधव सिंह नेगी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० जैली,
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 18/02/2023 दिन- शनिवार

5765

हे रुद्रा

रुद्रा है वह, वह है स्वयं भू,
बिन माँगे दे, क्या मैं माँगू?
रहे श्मशान में डमरु वाला,
शिव ने पिया विष का प्याला।।

जीवन की खातिर किया गया,
संघर्ष कर्म कहलाता है।
कर्मों के बन्धन में बँध कर,
वह फिर-फिर जीवन पाता है।।

जो कर्म करे वह मानव है,
दुष्कर्म करे वह दानव है।
निष्काम भाव सत्कर्म करे,
वो ही तो रघुपति राघव है।।

पशुओं की तुलना में मनुज को,
श्रेष्ठ बनाता, वो धर्म है।
मानव द्वारा किया गया,
हर कार्य कहलाता कर्म है।।

रचना -
पूनम गुप्ता "कलिका" (स०अ०)
प्रा० वि० धनीपुर,
धनीपुर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 20.02.2023

दिन- सोमवार

5766

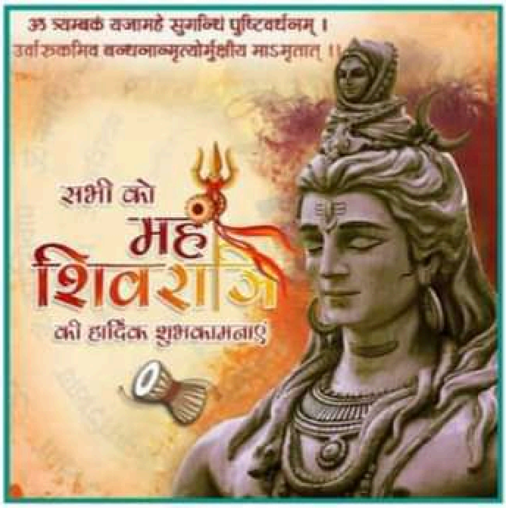

शिव तेरी महिमा

शिव तेरी महिमा, तेरा ही गान,
करते हैं सब तुमको प्रणाम।
ओ हर शम्भू, तू अभिराम,
जपते हैं सब तेरा नाम।।

निकली जटा से गंगा पावन,
जिसमें नहाकर निर्मल हो मन।
इस धरती के पाप मिटाये,
भारत की धरती हरषाये।।

आदिशक्ति माँ, अम्बा भवानी,
शिव शंकर की हैं पटरानी।
बेलपत्र, और दूध-धतूरा,
शिव को भाते औघड़ दानी।।

उच्च शिखर कैलाश के वासी,
तुम महेश, तुम ही अविनासी।
नमन करूँ मैं श्रद्धा पूर्वक,
तव चरणों की बनकर दासी।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 20.02.2023 दिन- सोमवार

5767

माँ...

तेरा चेहरा है बज़्म में ऐसा,
जैसे गुल में गुलाब होता है।
बात चुभती है उसकी अच्छी भी,
जिसका लहजा खराब होता है।।

माँ के दामन को याद करती हूँ,
सर पे जब आफताब होता है।
जितना औरों पे तंज़ करता है,
उतना वो बेनकाब होता है।।

दिल पे लगती है बात जब उसकी,
आँसुओं से खिताब होता है।
बज़्म-ए-उल्फत में आज भी ए शमा,
आपका इन्तेखाब होता है।।

प्यारी-प्यारी सी वो जो सूरत है,
भोली-भाली सी एक मूरत है।
आप सदियों जिएँ शमा चाहे,
आपकी सबको ही ज़रूरत है।।

रचना
शमा परवीन (अनुदेशक)
उ० प्रा० वि० टिकोरा मोड़
तजवापुर, बहराइच

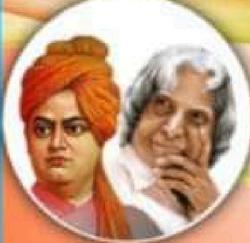

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 20-02-2023 दिन- सोमवार

5768

जय भोलेनाथ

सबके ही सिर पर रहा,
सदा आपका हाथ।
मेरे मन की भी व्यथा,
सुन लो भोलेनाथ॥

सकल सृष्टि के आप ही,
हो प्रभु जी आधार।
कलयुग में बाबा करो,
दुष्टों का संहार॥

भक्तों पर करते रहें,
बाबा आप दुलार।
बम-बम की ध्वनि से यहाँ,
गूँजे सब संसार॥

शशि ललाट पर राजता,
और जटा में गंग।
भस्म रमा कर सज रहे,
गर्दन पड़े भुजंग॥

प्राणी सब इस जगत के,
जो भी हैं बेहाल।
दर्शन देकर कीजिए,
बाबा उन्हें निहाल॥

रचना
प्रदीप कुमार चौहान (प्र०अ०)
प्रा०वि० कलाई
धनीपुर, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 21/02/2023 दिन- मंगलवार

5769

स्कूल चलें हम

सुबह हो गई बच्चों,
मुर्गा बोला कुकड़ू कू।
सूरज चढ़ा सिर पर,
अब तक सोया है तू।।

छोड़ कर आलस को,
उठ नहा कर स्कूल चल।
दूर नहीं है तेरा स्कूल,
गाँव में ही है, पैदल चल।।

अब न पढ़ा अगर तू,
आगे चल कर रोएगा।
बनेगा नौकर किसी का,
या फ़िर तू पत्थर ढोएगा।।

अपनी कलम की स्याही से,
ख़ुद लिख अपनी तकदीर।
पढ़ कर किताबों के पन्ने,
बदल दे जीवन की तस्वीर।।

रचना
भावना तोमर (स०अ०)
प्रा० वि० न० 1 मवी कलाँ
खेकड़ा, बागपत

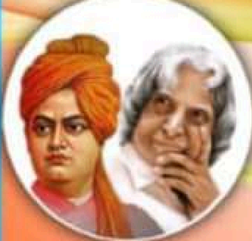

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 21.02.2023

दिन- मंगलवार

5770

महादेव शिव

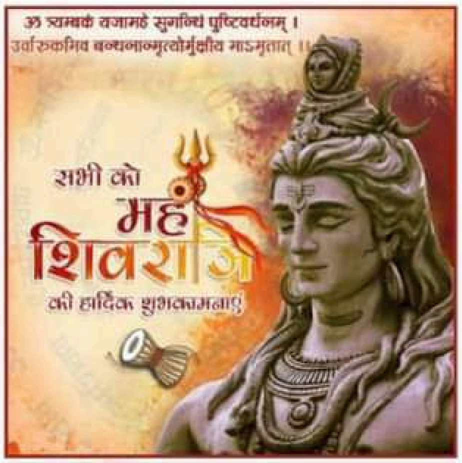

त्रिदेव में देव,
नाम है महादेव।
जय शंकर भोले,
डमरू डम बोले।।

भोलेनाथ, शंकर और हो महेश,
रुद्र, नीलकण्ठ, गंगाधर, नरेश।
तन्त्र साधना में भैरव नाम,
सदाशिव के कारण शिव भगवान।।

भोलेनाथ कहलाते स्वयं शम्भू,
स्वयं में जन्मे हैं शम्भू।
शिव के तेज से विष्णु पुराण,
नाभि से निकले ब्रम्हा पुराण।।

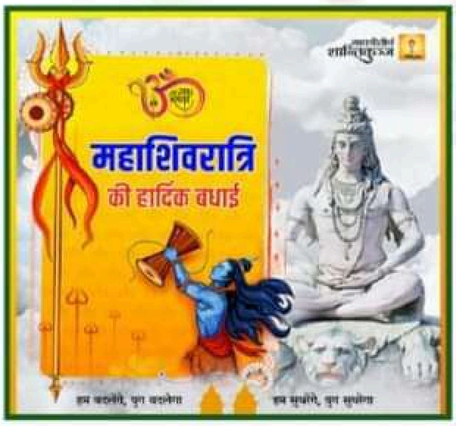

आदि देव भी शिव का नाम,
देवों में है प्रथम स्थान।
आदि शाक्ति हैं दुर्गा माता,
परम ब्रह्म सदाशिव पिता।।

रचना
शीबा नाज अंसारी (प्र०अ०)
प्रा० वि० बैसनपुरवा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 21-02-2023 दिन- मंगलवार

5771

देहाती तरीके

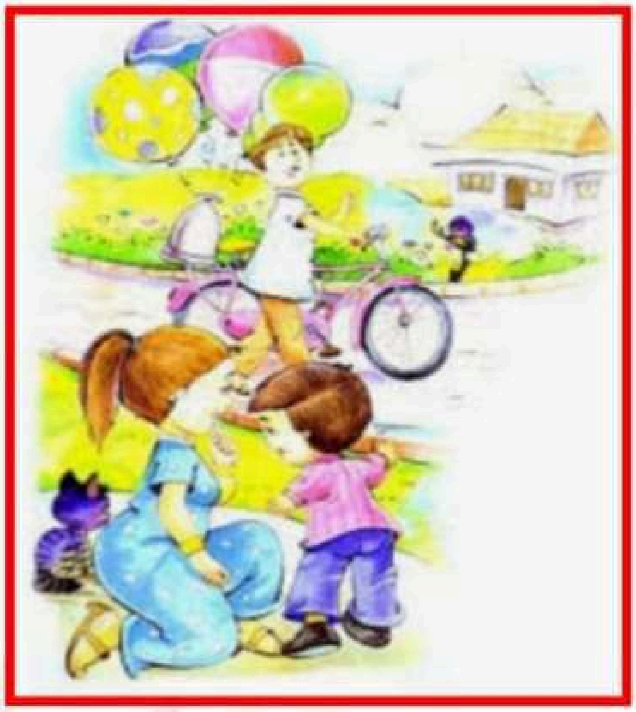

रंग-बिरंगे गुब्बारे जब,
हवा में हम लहराते हैं।
हवा खींचती उनको ऊपर,
इधर-उधर मँडराते हैं।।

इनसे पता हवा का चलता,
कितनी गति, किस ओर चली।
मद्धिम है या तेज हवा है,
गरम लगे या लगे भली।।

ये है मापक यन्त्र पुराना,
देहाती आजमाते थे।
गोला बना, गाड़ महि लकड़ी,
समय का पता लगाते थे।।

चले नदी में भँवर जहाँ,
गहराई का पता लगाते थे।
कर घरेलू उपचारों से वे,
रोगों को दूर भगाते थे।।

रचना
जुगल किशोर त्रिपाठी
प्रा० वि०- बम्हौरी
मऊरानीपुर (झाँसी)

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 21/02/2023 दिन- मंगलवार

5772

नारी शक्ति

सम्मान हो तुम, अभिमान हो तुम,
ईश्वर के विधि का विधान हो तुम।
तुम से है आदि तुम से ही अन्त,
जीवन का तुम में सार अनन्त।।

आँचल में अपने ममता को समेटे,
प्रेम, वात्सल्य की जो मूरत सारी।
फूलों सी कोमल काया है लेकिन,
वक्त पड़े बन जाए तलवार नारी।।

हर एक किरदार में ढलने वाली,
ऐसी अनुपम रचना है प्यारी।
जग-जननी कहलाने वाली,
श्रद्धा का दूजा नाम है नारी।।

नारी-शक्ति से मिल पूर्ण है नर,
बिन नारी-शक्ति अपूर्ण है घर।।
नारी का जिस घर हो सम्मान,
वो घर कहलाता स्वर्ग समान।।

रचना-:
लक्ष्मी चन्द्रवाल (स०अ०)
रा० उ० प्रा० वि० ईड़ाबधाणी
ब्लॉक- कर्णप्रयाग, चमोली

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 21-02-2023 दिन- मंगलवार

5773

चले घड़ी

टिक-टिक करती चले घड़ी,
लेकर साथ छोटी-बड़ी छड़ी।
तीन छड़ी है उसके साथ,
सुनो क्या कहती हमसे बात।।

सबसे छोटी घण्टा बताये,
सबसे बड़ी चाल पर इतराये।
सरपट-सरपट दौड़ लगाये,
हमको वो सेकेण्ड बतलाये।।

बीच वाली का दिमाग न सैट,
हमको बताती है वो मिनट।
समय चक्र है हमें दिखाती,
लेकिन कभी भी न है इतराती।।

कभी न थककर करती आराम,
है समय बताना इसका काम।
अपना काम करती मेहनत से,
करो सब शुक्रिया इसका दिल से।।

ब्रजेश सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० बीठना
लोधा, अलीगढ़

रचना

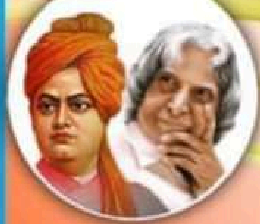

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 22.02.2023

दिन- बुधवार

5774

सप्ताह के दिन

सप्ताह में होते दिन सात,
सदैव मानो बड़ों की बात।
पहले आता है सोमवार,
विद्यालय के खुलते द्वार।।

दूजा आता है मंगल,
कभी न काटो वन-जंगल।
बुद्ध को तुम करो प्रणाम,
बुद्धि रूपी मिले वरदान।।

सप्ताह के दिन

- सोमवार
- मंगलवार
- बुधवार
- गुरूवार
- शुक्रवार
- शनिवार
- रविवार

गुरुवार होता चौथा दिन,
ईश्वर को नमन करो प्रतिदिन।
शुक्रवार का दिन है आता,
बुरी संगत से तोड़ो नाता।।

शनिवार कहलाये छठा दिन,
विद्यालय जाना है प्रतिदिन।
फिर आता प्यारा रविवार,
करती है माँ हमसे प्यार।।

रचना
आरती वर्मा (स०अ०)
प्रा० वि० रेवा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 22/02/2023 दिन-बुधवार

5775

अपणि भाषा बचौला

आवा दिर्दो-भुलों गढ़वाली बचौला,
सूणा दिर्दो-भुलों कुमाऊँनी बचौला।
अपणि बोलि-भाषा तैं अग्वाड़ी बढ़ौला,
अपणि दूध बोलि तैं अग्वाड़ी बढ़ौला।।

अपणि रीत-गीत अपणि भाषा बचौला,
अपणि माटी थाति कू कर्ज चुकौला।
अपणि बोलि भाषा तैं अग्वाड़ी बढ़ौला,
अपणि रीत-गीत कू सम्मान करला।।

अपणि रीत, अपणा गीत,
हमारि अपणि पछ्याण चा।
अपणि बोलि भाषा मा,
कन प्यारि रस्याण च।।

सीधी बोलि, सीधी भाषा,
सीधी हमारि चाल चा।
कला, शिक्षा, अमित ज्ञान,
संस्कृति महान चा।।

रचना-:
माधव सिंह नेगी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० जैली,
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

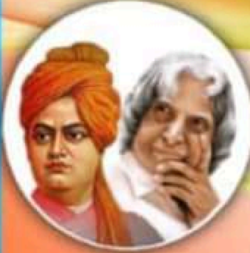

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 23.02.2023 दिन- गुरुवार

5776

पुष्पवाटिका

गेंदा, गुलाब, कचनार हो,
फूले मेरी बगिया।
गुलमेंहदी, गुलनार, चम्पा,
गुड़हल, बेला खिले मेरी बगिया।।

चमेली में आयी बहार हो,
चाँदनी फूले मेरी बगिया।
चमके चाँदनी आधी रात में,
कमल खिले सुप्रभात मेरी बगिया।।

बगिया भँवर इठलाय हो,
सब फूलों की माला बनायी।
भारत माता को उपहार,
जीवन में खुशियाँ अपार मेरी बगिया।।

रचना
कमला देवी (शि०मि०)
प्रा० वि० खरवलिया
सिधौली, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान मिशन शिक्षण संवाद शिक्षक का सम्मान

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 23/02/2023 दिन- गुरुवार

5777

"सतरंगी एक आकृति"

पापा जरा देखो तो ऊपर,
आसमान में है क्या छाया!
लाल, नारंगी और पीला,
हरा, बैंगनी और नीला।।

सात रंगों से बनी आकृति,
जैसे समायी हो पूरी प्रकृति।
सजा दिया वर्षा ने नभ पर,
सात रंगों का सुन्दर नजारा।।

पापा मुझको अति प्यारा लगता,
इन्द्रधनुष सा यह छाया कैसे ?
पर आसमान में आया कैसे ?
अपने हाथ तो कभी ना आता।।

देख हमें जैसे हो मुस्कुराता,
धरती पर ये क्यों नहीं आता ?
इन्द्रधनुष है कितना प्यारा,
सतरंगी लगता है नभ सारा।।

रचना-:
सूरी भारती (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० उठड़
ब्लॉक- चम्बा, टिहरी गढ़वाल

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 24/02/2023 दिन- शुक्रवार

5778

गर्मी

गर्मी के मौसम को लेकर,
सूरज दादा आये।
कभी तेज धूप चमकाते,
कभी गर्म लू चलाऐ।।

तवे जैसी धरती तपती,
फूल पौधे मुकुलाऐ।
टप-टप करके बहे पसीना,
गर्मी सबको सताए।।

ठंडी चीजें सबको भाती,
कुल्फी, पेप्सी मन को लुभाती।
पेड़ों की छाया सुख देकर,
गर्मी से राहत पहुँचाती।।

पँखे कूलर गर्मी से,
राहत कुछ दिलाते।
भिन-भिन करते मच्छर,
कष्ट बहुत पहुँचाते।।

रचना - प्रेमचन्द (प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० सिसोला खुर्द
जानी, मेरठ

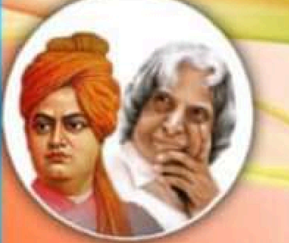

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 24.12.2022 दिन- शुक्रवार

5779

बसन्त सुषमा

लाल, पियर खिले फूल वन औ उपवन मा,
रंग औ सुगन्ध से मन को लुभाय रहे।
शीतल, सुगन्ध, मन्द त्रिबिधि बही बयार,
भौंरन के झुण्ड उनके ऊपर मण्डराय रहे।।

अम्बवा के बौरु से गमकि रहा वातावरण,
मद-मस्त होइके बिरवा लहराय रहे।
बसन्त की आहट से कोयलिया रही कूकि,
पशु-पक्षी सबका मन बहलाय रहे।।

गेहूँ की बाली मचलि रही खेतन में,
अरहर की फलियाँ गदराय के झूमि रहीं।
चना-मटर की करे न कोई बात,
सुनहरी आभा से धरती का चूमि रहीं।।

लालिमा मसूर के खेतन मा रही छाय,
सरसौं के खेत में तितलियाँ घूमि रहीं।
स्वागत बसन्त हेतु अपन अस्तित्व भूलि,
प्रकृति नायिका प्रतीत है भूमि रही।।

रचना
उमेश चन्द्र वर्मा (प्रवक्ता)
रा० इ० कालेज निशातगंज
लखनऊ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 24-02-2023 दिन- शुक्रवार

5780

हमारा आँगन, हमारे बच्चे

हमारा आँगन, हमारे बच्चे,
बच्चे होते मन के सच्चे।
निपुण रंग भरें इनमें पक्के,
बुराइयों के उड़ा दें ये छक्के।।

हमारा आँगन, हमारे बच्चे,
देश विदेश में हों इनके चर्चे।
निपुण लक्ष्यों से जब इन्हें गढ़ें,
ये खूब लिखे-पढ़ें आगे बढ़ें।।

हमारा आँगन, हमारे बच्चे,
प्यारे-प्यारे, अच्छे बच्चे।
क्रोध, लोभ, ईष्या से दूर रहें,
महान व्यक्तित्व के साथ रहें।।

हमारा आँगन, हमारे बच्चे,
हमारा भविष्य हैं ये बच्चे।
इनका बचपन सुदृढ़ हो,
जीवन लक्ष्य पर ये दृढ़ हों।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी,
जवाँ, अलीगढ़

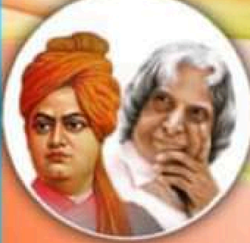

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5781

दिनांक- 24.2.2023   दिन- शुक्रवार

बच्चे पढ़ें सभी...

हर दिल की आरज़ू है,
कि बच्चे पढ़ें सभी,
तारे ज़मीं पे लाने की,
कोशिश करें सभी।।

मुझको यकीं है मुल्क का,
होगा विकास तब।
हमराह सब को साथ में,
लेकर चलें सभी।।

उल्फत के दीप आओ!
जलाने चलो चलें।
नफरत की आग मिलके,
बुझाने चलो चलें।।

मेरे वतन में रोशनी,
जिसकी रहे सदा।
ऐसी शमा को आओ!
जलाने चलो चलें।।

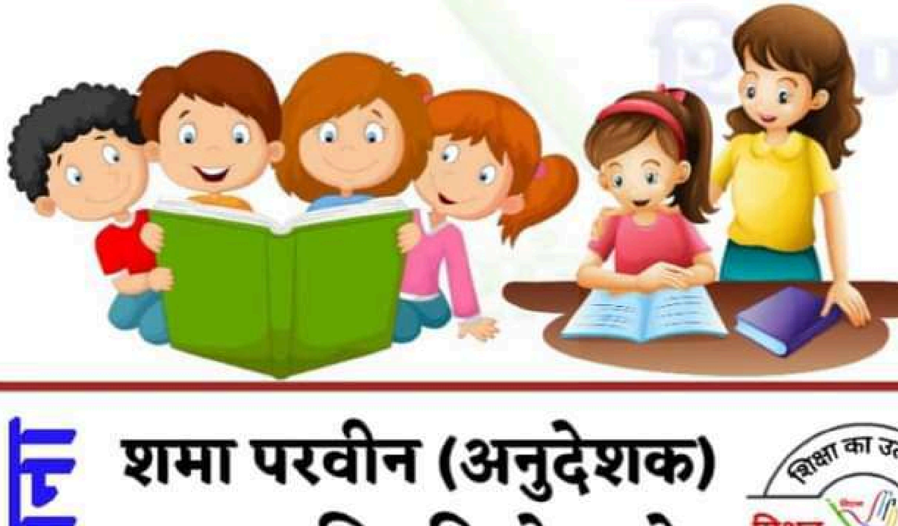

रचना
शमा परवीन (अनुदेशक)
उ० प्रा० वि० टिकोरा मोड़
तजवापुर, बहराइच

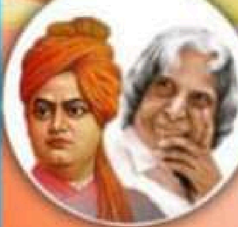

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 24/02/2023 दिन- शुक्रवार

5782

हे माँ सरस्वती

माँ! हममें ऐसी ज्योति जगाओ,
निर्मल सारा तन-मन हो जा।
माँ! हममें जो भी कमियाँ हैं,
उनसे हमको मुक्ति दिलाओ।।

हे माँ! प्रार्थना यह स्वीकार करो,
हमारे सारे विकार मिटाओ।
हममें करुणा, विनय, विवेक,
परिपूरित कर दो मातेश्वरी।।

माँ! तुम ज्ञान की देवी हो,
हम तो अज्ञानी अंजान।
तन मन को उजियारा कर दो,
हम पर अपनी कृपा बरसाओ माँ।।

वर दे हे माँ! वीणा-वादिनि,
विद्या, बुद्धि,धीरज, संयम का।
तुम्हारी कृपा से ये जीवन,
सुन्दर सरल हो जाए माँ।।

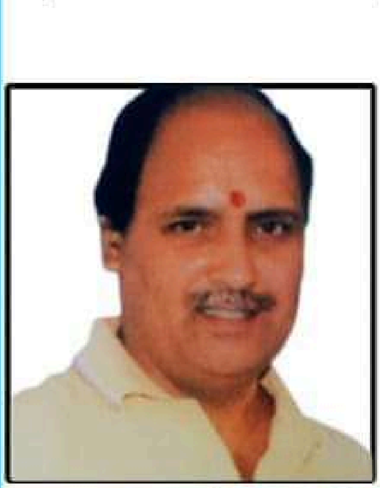

रचना-:
कालिका प्रसाद सेमवाल
(अव०प्रा० प्रवक्ता)
ग्राम- भरतपुर
ब्लॉक- अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

5783

दिनांक- 25/02/2023 दिन- शनिवार

होली आयी

होली आयी, होली आयी,
रंगों की थाली है सजायी।
अबीर, गुलाल और गुब्बारे,
पिचकारी पानी की भर लायी।।

घर-घर बनते हैं पकवान,
मिल खाएँ अपने और अनजान।
रूठों को मनाना होली पर,
सबको देना मान-सम्मान।।

होली की ज्वाला जब दहकती,
हमको यही सन्देश है देती।
नाश बुराई का निश्चित है,
सच के सिर जीत है बँधती।।

होली के पावन पर्व पर,
नशा नहीं करना मेरे भाई।
प्रेम, सौहार्द का पर्व है यह,
गाओ सब मिल होली आयी।।

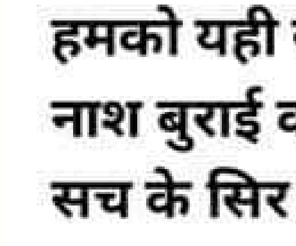

रचना-
ऋतु अग्रवाल (स०अ०)
रागिनी संगीतशाला,
ब्रह्मपुरी, मेरठ

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 25/02/2023 दिन- शनिवार

5784

मेरी अभिलाषा

माँ भारती के आँचल का,
कण-कण सजाना चाहती हूँ।
धूमिल होती भारतीय,
संस्कृति बचाना चाहती हूँ।।

कला की मैं बन तूलिका,
रंग भरना चाहती हूँ।
गोधूलि रज-कण का मैं,
तिलक करना चाहती हूँ।।

कृषकों संग हल चलाकर,
श्रमजल बहाना चाहती हूँ।
ऊसर खेतों को बना उर्वरा,
लहलहाना चाहती हूँ।।

अपने वतन की वसुन्धरा का,
परिधान सजाना चाहती हूँ।
मलिन हो चुके हर चेहरे पर,
मुस्कान खिलाना चाहती हूँ।।

रचना-:
माधुरी नैथानी (स०अ०)
रा० उ० मा० वि० श्रीकोट गंगा नाली
वि० ख०- खिर्सू, पौड़ी गढ़वाल

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 25-02-2023 दिन- शनिवार

5785

काँवर बोले बम-बम भोले

चल पड़े काँवड़िया बन,
भोले बाबा के धाम।
कन्धे पर रख काँवड़ को,
चलते रहते सुबह-शाम।।

राम-रावण ने भी काँवड़िया बन,
शिव जी का अभिषेक किया।
पद यात्रा पूरी करके,
संकल्प शक्ति को पूर्ण किया।।

गंगा का जल काँवड़ में भर,
नित्य शिव अभिषेक किया।
भगवान शिव ने भी उनको,
खुश हो आशीष दिया।।

सब काँवड़िया उत्साहित होकर,
सैकड़ों मील पदयात्रा करते।
जगह-जगह जलपान भी करते,
शिवलिंग पर जल अर्पित करते।।

रचना
अनुपमा जैन (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० मौहकमपुर
इगलास, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 25.02.2023   दिन- शनिवार

5786

जनसंख्या

जनसंख्या असीमित,
संसाधन हैं सीमित।
अब जनसंख्या पर,
रोक ये लगाइये।।

सुखी छोटा परिवार,
खुशी का ये घर-बार।
करो अब उपचार,
बोझ न बढ़ाइये।।

नर-नारी अविराम,
दो के बाद हो विराम।
वरना है पछताना,
पल न गँवाइये।।

रोटी, कपड़ा, मकान,
जीवन का है आधार।
स्वास्थ्य ही परम धन,
इसे अपनाइये।।

रचना
लक्ष्मी देवी वर्मा (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सिहानीपारा
परसेण्डी, सीतापुर

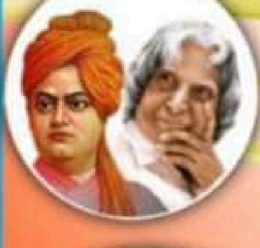

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 27/02/2023 दिन- सोमवार

5787

फागुण ऐगे

देखा एक बार फेर फागुण ऐगे,
सूरज फेर तपण लैगे।
ऊँचि डाँड्यों कु ह्यूं गळन लैगे,
सर-सर-सर बथौं चलण लैगे।।

देखा एक बार फेर फागुण ऐगे,
अगास मा बिजलि चमकण लैगे,
डाळि ब्वटळ्यों मा म्यौळ्यार छैगे।
ग्यूँ-जौ कि सार्यों मा घर्या फूलिगे।।

फूलों कि डाळ्यों मा फुलार ऐगे,
मेळु, आड़ू, पैंय्या, बुराँश फूलण लैगे।
पातळुं सेण्टाई, सेलपाड़ि फूलण लैगे,
देखा एक बार फेर फागुण ऐगे।।

घुघूती मेलुड़ी बासण लैगे,
कफ्फू, हिलाँश बासण लैगे।
धरती हमारी सतरंगी ह्वेगि,
रंगों कू त्योहार होलि भि ऐगि।।

रचना-:
माधव सिंह नेगी (प्र०अ०)
रा० प्रा० वि० जैली,
ब्लॉक- जखोली, रुद्रप्रयाग

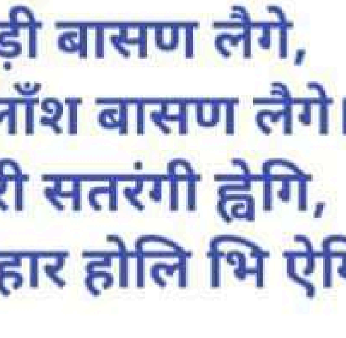

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 27/02/2023 दिन- सोमवार

5788

तटरक्षक

तटरक्षक बनकर करते तुम,
समुद्र तट की रखवाली।
थल सेना की भाँति तुम्हारी,
देशभक्ति है मतवाली।।

मत्स्य, तेल, खनिज सुरक्षा,
इन सबकी जिम्मेदारी है।
मछुआरों की रक्षा करते,
प्रीत निभाते न्यारी है।।

तस्करी पर लगाम लगाते,
पर्यावरण की अलख जगाते।
तटीय बलों की करते रक्षा,
दुर्लभ प्रजातियों की करें सुरक्षा।।

विपरीत परिस्थिति में भी,
कर्तव्य पूर्ण कर जाते हो।
बाजी लगाकर जान की,
शोर्य, साहस भर जाते हो।।

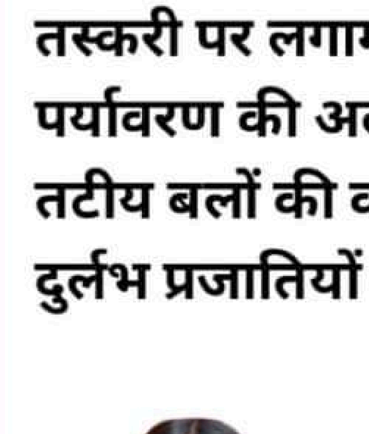

रचना-
रामकुमारी (स०अ०)
प्रा० वि० खालिदपुर- 2
मवाना, मेरठ

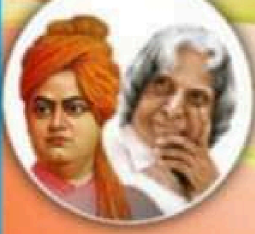

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 27-02-2023 दिन- सोमवार

5789

बसन्त की बहार

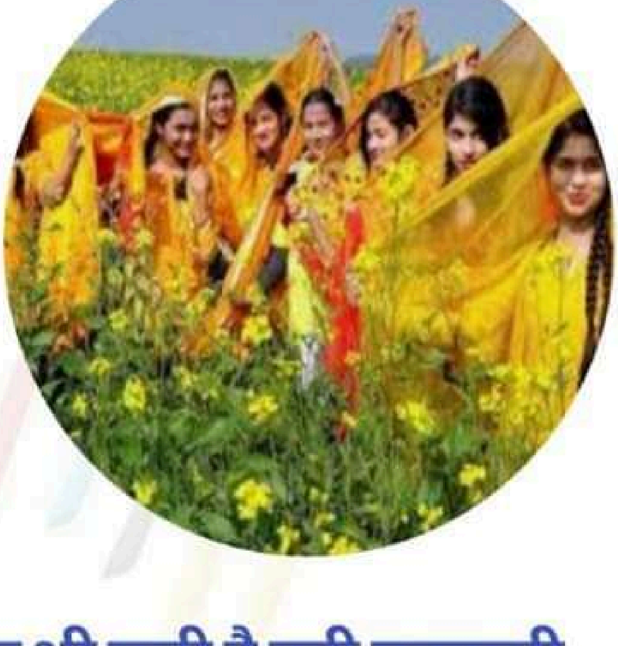

पतझड़ का मौसम है आया,
पीले-पीले पत्ते है लाया।
मौसम ने बदली है करवट,
पेड़ों से उतरी है चादर।।

आया बसन्त लाया है बहार,
पत्ते लाया है कई हजार।
नीले, पीले, लाल, गुलाबी,
फूलों ने है महक उड़ा दी।।

हवा भी चली है बड़ी मतवाली,
गुनगुनी धूप ने भी चादर फैला दी।
ऋतुओं का राजा है बसन्त,
हम सब करते हैं इसे पसन्द।।

रचना
प्रियंका रावत (स०अ०)
प्रा० वि० नगला मानसिंह
लोधा, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

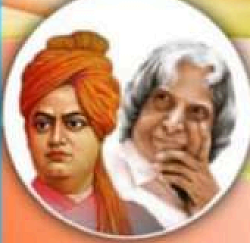

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 28.02.2023

दिन- मंगलवार

5790

ऋतु गर्मी की...

ऋतु गर्मी की आने वाली,
धूप है सबको सताने वाली।
खूब पसीना बहेगा सबको,
छाँव सुहायेगी अब हमको।।

मैंगो शेक, पना हैं पीते,
कुल्फी ठण्डी-ठण्डी खाते।
खीरा, ककड़ी, और कोल्डड्रिंक,
आइसक्रीम है सबको भायी।।

शाम-सुबह का समय सुहाना,
सूरज ने किरणें फैलायी।
निकले कूलर, पंखा, ए0 सी0,
ऋतु गर्मी की अब है आयी।

सूती कपड़े सबको भाते,
ताल-तलैया में हैं नहाते।
छुप गये स्वेटर और रजाई,
ऋतु गर्मी की अब है आयी।।

रचना
शिखा वर्मा (इं०प्र०अ०)
उ० प्रा० वि० स्योढ़ा
बिसवाँ, सीतापुर

शिक्षा का उत्थान — शिक्षक का सम्मान — मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

5791

दिनांक- 28-02-2023 दिन- मंगलवार

हमारी बाड़ी

आँगनबाड़ी हमारी खिली-खिली,
बच्चों की भाषा देखो मिली-जुली।
छोटे-छोटे ये प्यारे-प्यारे पौधे हैं,
इनसे महके गाँव की गली-गली।।

चलते-फिरते ये पौधे प्यारे,
महक बिखेरे हँस-हँस के सारे।
इनके भोले-भाले, नटखट नखरे,
खिलाओ इन्हें खूब खेल निराले।।

खेल-खिलाते इनको सींचो रे,
धूप, हवा, पौष्टिक भोजन दो रे।
यही वह कीमती समय है होता,
शेष जीवन जिस पर खड़ा होता।।

संस्कारवान बन सुमन विकसाएँ,
राष्ट्रभक्त बन परचम फहराएँ।
सच्चे अर्थों में मानव बन कर,
मानवता की सेवा कर जाएँ।।

रचना
प्रतिभा भारद्वाज (स०अ०)
उ० प्रा० वि० वीरपुर छबीलगढ़ी,
जवाँ, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान शिक्षक का सम्मान मानवता का कल्याण

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 28/02/2023 दिन- मंगलवार

5792

माँ शारदे भव सागर से तार दे

माँ शारदे ऐसी ज्योति जगाओ,
निर्मल सारा तन-मन हो जाए।
माँ हममें जो भी कमियाँ हैं,
उनसे हमको मुक्ति दिलाओ।।

माँ प्रार्थना यह स्वीकार करो,
रात दिन तेरा ही गुणगान करूँ।
करुणा, विनय, विवेक से हमको,
परिपूरित तुम कर दो माँ।।

ज्ञान की देवी तुम हो मातेश्वरी,
माँ हम तो तिमिर से घिरे हुए।
तन-मन को उजियारा कर दो,
माँ हम पर ऐसी कृपा करो।।

वर दे हे वीणा वादिनि,
विद्या, बुद्धि, धीरज, संयम का।
माँ हम पर अपनी कृपा करो,
माँ शारदे भव सागर तार दे।।

रचना-:
कालिका प्रसाद सेमवाल
(अव०प्रा० प्रवक्ता)
ग्राम- भरतपुर
ब्लॉक- अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

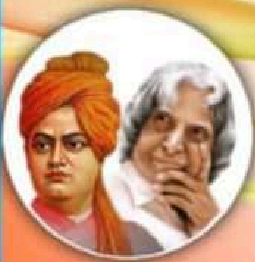

दिनांक- 01.03.2023

दिन- बुधवार

5793

समय

समय कहे इन्सान से,
यूँ ही बढ़ता चला जा।
जो भी मिले राहों में,
उनसे मिलता चला जा।।

न बिताओ इसे खेलकर,
मेहनत करो बेहिसाब।
जो चाहो मिल जायेगा,
पूरा होगा हर ख्वाब।।

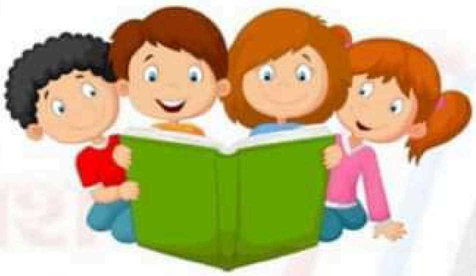

अगर समय गया निकल,
फिर वापस न आयेगा।
जो आज को करेगा बर्बाद,
यही कल बन जायेगा।।

आज नहीं तो कल,
मंजिल मिल जायेगी।
सफलता तुम्हारे पीछे,
फिर चल कर आयेगी।।

रचना

भुवन प्रकाश (इं०प्र०अ०)
प्रा० वि० पिपरी नवीन
मिश्रिख, सीतापुर

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 01-03-2023 दिन- बुधवार

5794

वीर शिरोमणि

कानों में जब भी पड़ी,
राणा की हुँकार।
तब अकबर की फ़ौज का,
हिलता था आधार।।

वो मुगलों के खून की,
प्यासी थी तलवार।
जीवन भर लड़ते रहे,
कभी न मानी हार।।

उन के भय से युद्ध में,
मचता हाहाकार।
लाखों मुगलों का किया,
था रण में संहार।।

दुश्मन को घोड़े सहित,
वो देते थे चीर।
सुनो आज तक ना हुआ,
राणा जैसा वीर।।

रचना
प्रदीप कुमार चौहान (प्र०अ०)
प्रा०वि० कलाई
धनीपुर, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 02.03.2023 दिन- गुरुवार

5795

रूठे ऋतुराज

अभी-अभी तो तितली रानी,
कर पायी श्रृंगार।
कलियों की मुस्कान अधर पर,
मधुकर की गुञ्जार।।

फागुन में ही आये,
फागुन में जाने की आस।
कहाँ अब शीतल पवन सुवास?
जगत से क्यों रूठे ऋतुराज?

यौवन पर हैं जौ-गेहूँ,
फूल रही क्यों साँस?
रूखी-सूखी धरा लग रही,
क्यों फागुन में प्यास?

नहीं अभी तक मधु भर पाया,
पुष्पों पर यह त्रास।
चले अब होकर कहाँ उदास?
करें कुछ रुककर यहाँ प्रवास।।

रचना
रूपकिशोर अवस्थी (प्र०अ०)
प्रा० वि० शेखवापुर
परसेण्डी, सीतापुर

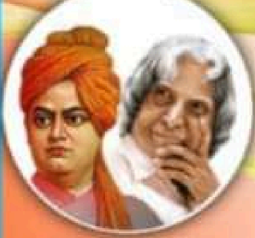

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 02-03-2023 दिन- गुरुवार

5796

वधू

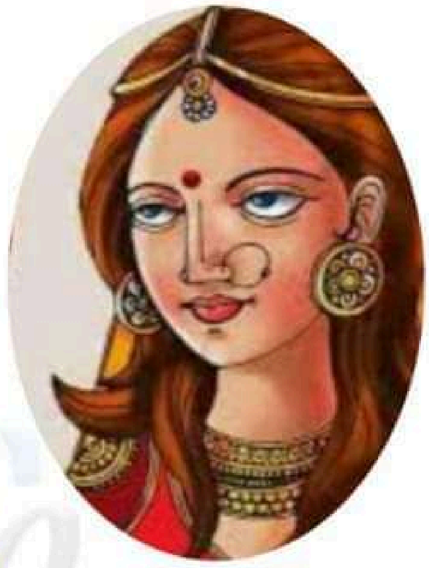

खुशबू मेरे घर की मेरी बहू से महकती,
सबका प्यार पाकर वह बेटी बनकर हँसती।
जब हो जाती कोई भूल मैं प्यार से समझाती,
बहू मेरी मास्टर तो कभी डॉक्टर बन जाती।।

दर्द अपना झेल कर सब की सेवा में लग जाती,
सास-ससुर के लिए बहू घर की बेटी बन जाती।
जब सास माँ और बहू बेटियाँ बन जाती हैं,
सारी मुश्किलें पल भर में आसान हो जाती हैं।।

कभी बेटी, पत्नी, बहू, कभी माँ बन जाती,
कभी लक्ष्मी, कभी दुर्गा अपने को है पाती।
गुलाब, चमेली, बेला सी महके, जहाँ कहीं भी जाती,
सबके मन को रीझकर, प्यार सम्मान को है पाती।।

रचना
अनुपमा जैन (स०अ०)
उच्च प्रा० वि० मौहकमपुर
इगलास, अलीगढ़

शिक्षा का उत्थान, मिशन शिक्षण संवाद, शिक्षक का सम्मान।

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 02/03/2023 दिन- गुरुवार

5797

माँ की ममता

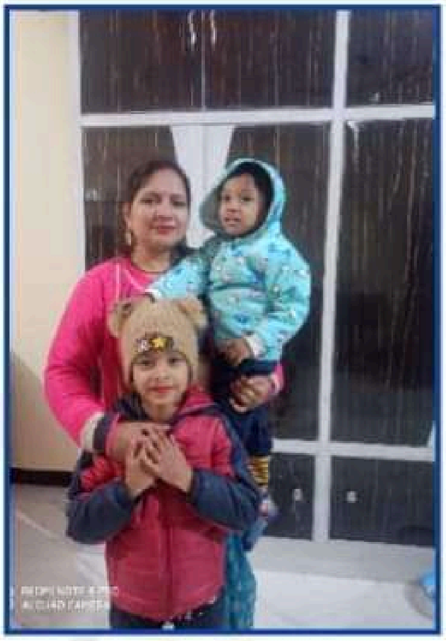

माँ की चाहत इस जग में,
है सबसे अनमोल।
हर रिश्ते से बढ़कर है,
ये रिश्ता अनमोल।।

माँ बच्चों पर स्नेह लुटाती,
ममता की मूरत कहलाती।
जीवन की कठिन डगर पर,
माँ ही चलना सिखलाती।।

माँ के आँचल की छाँव में,
हम बड़ा सुकून पाते हैं।
माँ के दिए संस्कारों से,
हम जीवन में उन्नति पाते हैं।।

ईश्वर को हम इस धरती पर,
माँ के रूप में पाते हैं।
जीवन भर जाता खुशियों से,
जब हम माँ का आशीर्वाद पाते हैं।।

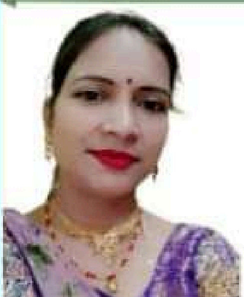

रचना- मृदुला वर्मा (स० अ०)
प्रा० वि० अमरौधा प्रथम
कानपुर देहात

मिशन शिक्षण संवाद

काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03.03.2022 दिन- शुक्रवार

5798

हम निपुण प्रदेश बनाएँगे

अब तो सारे बच्चे दक्ष होंगे,
हम शिक्षा का स्तर बढ़ाएँगे।
बच्चों के हित की बात करेंगे,
हर बच्चे को निपुण बनाएँगे।।

अब होगी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा,
हम शिक्षा की अलख जगाएँगे।
बच्चे संस्कारों से सुसज्जित होंगे,
अपने प्रदेश को निपुण बनाएँगे।।

हम नये युग का निर्माण करेंगे,
बच्चों का अधिगम स्तर बढ़ाएँगे।
बच्चे भाषा-गणित के लक्ष्य पाएँगे,
आओ मिलकर इतिहास रचाएँगे।।

रचना- अशोक अंतिल (स०अ०)
उ० प्रा० वि० सुल्तानपुर हटाना
बागपत, बागपत

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03-03-2023 दिन- शुक्रवार

5799

भगत सिंह

28 सितम्बर 1907 का,
ये दिन महान बहुत है।
क्रान्तिकारी शहीद भगत सिंह,
का यह जन्मदिन है।।

बचपन में ही ये क्रान्तिवीर,
बन्दूकें खेत में बोता था।
शहीदों की मिट्टी को,
सिरहाने रखकर सोता था।।

देशभक्ति की प्रचण्ड लहरें,
इनकी रग-रग में बहती थी।
गुलामी की बेड़ियों से,
इनको फाँसी बेहतर लगती थी।।

अमृतसर का जलियांवाला,
कभी नहीं वह तो भूले।
राष्ट्रप्रेम की ऐसी हिलोरें,
जो आसमान को भी छू लें।।

रचना
पूनम सारस्वत (स०अ०)
एकीकृत विद्यालय रुपानगला
खैर, अलीगढ़

मिशन शिक्षण संवाद
काव्यांजलि दैनिक सृजन

दिनांक- 03.03.2023 दिन- शुक्रवार

5800

होली...

धर्म के द्वेष-भाव का,
शोर मचा चौराहों पर।
इन भावों की जले होलिका,
हर गली, मोड़, चौराहों पर।।

धूम-धड़ाका, हँसी-ठिठोली,
की आओ मिल खेलें होली।
फागुन की फगुआ बयारि में,
बच्चे, बूढ़े सब हमजोली।।

बैर-भाव सब भूल-भुलैया,
होली गीत के बनो गवैया।
ब्रज जैसा सब रास रचाओ,
कोई राधा, कोई बनो कन्हैया।।

बने घरों में खोया, गुझिया,
पापड़, चिप्स बने सब बढ़िया।
सौंफ, लौंग, कत्था, इलायची,
डाल के पान खिलाओ बढ़िया।।

रचना
अभय प्रताप सिंह (स०अ०)
प्रा० वि० पकरिया भटपुरवा
हरगाँव, सीतापुर